चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

श्रावण-भाद्रपद, युगाब्द 5127, अगस्त 2025

आपदा में सेवा ही संकल्प

दिव्य शक्ति का प्रतीक बिजली महादेव

डॉ. ऐश्वर्या शर्मा, सुंदरनगर

बिजली महादेव मंदिर, हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित, एक अद्वितीय धार्मिक और प्राकृतिक तीर्थ स्थल है। समुद्र तल से 2,460 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। हर 12 वर्षों में इस मंदिर के शिवलिंग पर आकाशीय बिजली गिरती है, जिससे वह खंडित हो जाता है। परंपरागत रूप से पुजारी इसे मक्खन और चंदन से पुनः जोड़ते हैं, जिसे एक चमत्कारी घटना माना जाता है। कुल्लू से लगभग 14 किलोमीटर दूर स्थित यह मंदिर न केवल श्रद्धालुओं के लिए बल्कि प्रकृति प्रेमियों और साहसिक यात्रियों के लिए भी अत्यंत आकर्षण का केंद्र है।

धार्मिक महत्व : बिजली महादेव को 'कुलांत पीठ' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है कुल्लू घाटी का अंत। मान्यता है कि यहां भगवान शिव ने एक राक्षस का वध किया था जो कुल्लू घाटी में आतंक मचा रहा था। इस घटना के बाद ही यह स्थान 'बिजली महादेव' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वास्तुकला और संरचना मंदिर का निर्माण पारंपरिक काठ-कुणी शैली में 20वीं सदी में हुआ था, जो हिमाचली पहाड़ी वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली है। मान्यता है कि इस मंदिर का मूल निर्माण महाभारत काल में पांडवों द्वारा उनके अज्ञातवास के दौरान कराया गया था। मंदिर के गर्भगृह में शिवलिंग प्रतिष्ठित है, जिसके दोनों ओर भगवान शिव और उनके वाहन नंदी की पत्थर की मूर्तियाँ विराजमान हैं। गर्भगृह के सामने एक 60 फुट ऊँची लकड़ी की छड़ी भी स्थापित है, जो देवदार के वृक्षों से निर्मित है और धार्मिक प्रतीक के रूप में पूजी जाती है।

प्राकृतिक सौंदर्य और रोमांच से भरपूर यह मंदिर पर्वतीय जंगलों, देवदार के वृक्षों और बर्फ से ढकी चोटियों के बीच स्थित है। यहां से पूरे कुल्लू और पार्वती घाटी का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। मंदिर तक पहुँचने के लिए लगभग 3 किलोमीटर की ट्रैकिंग करनी पड़ती है, जो रोमांचप्रेमियों के लिए एक सुखद अनुभव होता है। रास्ते में पक्षियों की चहचहाहट और शुद्ध वातावरण आत्मा को शांति प्रदान करता है। निष्कर्षत:, सावन का महीना हिंदू धर्म में भगवान शिव की उपासना के लिए सबसे पवित्र समय माना जाता है। यह मास प्रकृति की हरियाली, वर्षा की ठंडी बूँदों और श्रद्धा की गहराई से परिपूर्ण होता है। इस शुभ समय में देशभर के शिवालयों में भक्तों की भीड़ उमड़ती है, सावन का महीना और बिजली महादेव मंदिर एक साथ मिलकर श्रद्धा, रहस्य और प्रकृति के अनुपम संगम को दर्शाते हैं। यह समय भक्तों को भगवान शिव से जोड़ता है, मन को शांति देता है, और जीवन में अध्यात्म का संचार करता है।

बिजली महादेव की पावन यात्रा के दौरान इन बातों का जरूर पालन करें:

- रास्ते में प्लास्टिक, खाने के पैकेट या किसी भी प्रकार का कचरा न फेंकें।
- पेड़-पौधों को क्षति न पहुँचाएं — ये शिवजी के स्वाभाविक आभूषण हैं।
- तेज़ आवाज़ में गाने बजाने या अनावश्यक हॉर्न बजाने से बचें — शांति ही सच्ची भक्ति है।
- स्थानीय संस्कृति, रीति-रिवाज और श्रद्धा का पूरा सम्मान करें।

पर्यावरण बचाएं, भक्ति निभाएं : जहां शिव का वास है, वहां स्वच्छता और शांति का एहसास है। सच्ची भक्ति वही है जो प्रकृति, पर्वत और पर्यावरण का आदर करे। आओ, मिलकर बिजली महादेव को स्वच्छ और दिव्य बनाए रखें।

परामर्श
डॉ. किस्मत कुमार
श्री चन्द्र प्रकाश
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह

सम्पादक मण्डल
डॉ. उमेश मौदगिल, डॉ. जय कर्ण,
डॉ. सपना चंदेल, हितेन्द्र शर्मा

आवरण व अक्षर संयोजन
राजेश शर्मा

वितरण प्रमुख
नरेन्द्र कुमार

प्रकाशक / मुद्रक
कमल सिंह सेन

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
दूरभाष : 0177 - 2836990
व्हाट्स ऐप : 76500 00990
ई-मेल : matrivandanashimla@gmail.com

मासिक शुल्क	₹ 15
वार्षिक शुल्क	₹150
आजीवन शुल्क	₹1500

वैधानिक सूचना :
पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

मातृवन्दना

वर्ष: 33 अंक : 08 हिन्दी मासिक, शिमला (हिमाचल प्रदेश),
श्रावण-भाद्रपद, कलियुगाब्द 5127, अगस्त 2025

इस अंक में...

संपादकीय	प्राकृत आपदा : सुरक्षा एवं सेवा	5
चिन्तन	प्रकृति से छेड़छाड़-बरसात का कहर	6
प्रेरक प्रसंग	बृहत्तर भारत का स्वर्णिम इतिहास	7
आवरण	समाज सेवा का पर्याय-सेवा भारती	8
महिला जगत्	मरीजों की मसीहा डॉ. अनिकिता शर्मा	15
संगठनम्	सोशल मीडिया को संस्कृति और सामाजिक...	16
नवाचार	खराब बाइक से बना दी कार	18
देश प्रदेश	अंतर्राष्ट्रीय एग्री-हॉर्टी-ऑर्गेनिक एक्सपो	19
धर्म जागरण	भक्ति, श्रद्धा प्रेम का पर्व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	20
त्योहार-पर्व	रक्षाबंधन इतिहास एवं परंपरा	21
आपदा	हिमाचल में बादल फटने की स्थिति गंभीर	23
युवा पथ	अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चमके हिमाचल के सितारे	25
घूमती कलम	एन.सी.ई.आर.टी. ने बदला पाठ्यक्रम	26
समसामयिकी	मेघों का बरसना पहाड़ों का दरकना...	27
स्वतंत्रता दिवस	आपातकाल में कांग्रेस का तानाशाही चेहरा	29
कृषि	लाहुल के किसान ने तैयार किया हींग...	31
काव्य जगत्	प्रकृति माता	32
स्वास्थ्य	ज्यादा नमक सेहत का दुश्मन...	33
विश्व दर्शन	वेदांत दर्शन और गीता का प्रचार...	34
बाल जगत्	रूप व गुण श्रेष्ठ कौन ?	35

अमृत वचन

मातृभूमि का कल्याण ही हमारा धर्म है एवं
उसकी बाधाओं का सामना करना हमारा कर्म
-----गणेश शंकर विद्यार्थी

पाठकीय...

महोदय,

मातृवंदना पत्रिका का जुलाई 2025 वाला अंक मिला। हमेशा की तरह अलग-अलग विषयों पर अच्छी जानकारी मिली । इस पत्रिका में राष्ट्रीय तथा प्रांतीय स्तर के वर्तमान सामयिक विषयों का प्रमाणिकता से उल्लेख रहता है। उसके साथ-साथ हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति के संबंध में भी अच्छी जानकारी पढ़ने को मिलती है।

वास्तव में यह पत्रिका सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी साबित हो रही है। इसमें सभी के लिए कुछ ना कुछ पढ़ने के लिए रहता है, जो कि इस पत्रिका की एक विशेष पहचान है। इसके लिए संपादक मंडल एवं मातृ वंदना संस्थान का प्रयास सफल एवं सराहनीय कहा जाता जा सकता है। मातृवंदना पत्रिका प्रदेश में सबसे अधिक छापने वाली गैर राजनैतिक पत्रिका है, जिसमें धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक विषयों पर आधारित सामग्री प्रकाशित की जाती है। पत्रिका के संपादकीय में सारे अंक का सारांश और एक स्पष्ट विमर्श पढ़ने को मिलता है। जो कि पाठकों के लिए एक का प्रेरणास्त्रोत है। यह पत्रिका संगठन की विभिन्न योजनाओं को भी पाठकों तक पहुंचाने में सफल हो रही है। जिससे विभिन्न संगठनों द्वारा चलाई जा रही समाज सेवा की योजनाओं के बारे में पता चलता है। यह पत्रिका इसी तरह से निरंतर प्रकाशित होती रहे और उपयोगी, रोचक एवं प्रामाणिक जानकारी हिमाचल प्रदेश के गांव गांव के पाठकों तक पहुंचती रहे, ऐसी कामना है।

खेमराज भारद्वाज, अर्की, जिला सोलन, हि.प्र.

महोदय,

सनातन धर्म संसार के सभी मत पंथों का मूल है। जहां अन्य मत मजहबों को लगभग अढाई हजार साल हुए हैं वहां सनातन धर्म सृष्टि के आदिकाल से प्रचलित है और इसका करोड़ वर्षों का इतिहास है। अब तो वैज्ञानिक भी सृष्टि की रचना का समय करोड़ों वर्ष पूर्व मानने लगे हैं। प्राचीन हिंदू साहित्य में जिस ज्ञान विज्ञान और कर्मकांड का प्रामाणिक उल्लेख हुआ है वे सभी विषय अब विज्ञान और व्यवहार के आधार पर सत्य साबित होने लगे हैं। इस दृष्टि से इतिहास, पुरातत्व की दृष्टि से हिंदू धर्म से संबंधित इतिहास सबसे प्राचीन है। आज भी हिंदू संस्कृति केअवशेष विश्व के विभिन्न भागों में प्राप्त हो रहे हैं, जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि भारतवर्ष से ही हिंदू संस्कृति एवं सभ्यता विश्व के अनेक भागों में फैली है। भले ही वर्तमान में विभिन्न देशों में अलग-अलग मत संप्रदाय और मजहब प्रचलित हैं। वहां के इतिहास में भी भारत की हिंदू संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है। जैन बौद्ध आदि भी समय के प्रवाह से हिंदू धर्म से ही निकले हुए हैं। इसलिए उनका आदि स्त्रोत हिंदू धर्म ही है। हिंदू धर्म में मान्यताप्राप्त प्राचीन अध्यात्म के सिद्धांत प्रकारान्तर से जैन और बौद्ध परंपरा में प्रचलन में देखे जा सकते हैं। इस दृष्टि से मातृवंदना का जुलाई 2025 का अंक अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसमें हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में बौद्ध धर्म एवं संस्कृति तथा परंपराओं के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की गई है। पत्रिका को भविष्य में भी इस तरह के प्रयास जारी रखने चाहिएं ताकि हिंदू धर्म एवं संस्कृति की विशालता और मूलाकता को सिद्ध स्थापित करते हुए अन्य मत मतांनरों के साथ भी सौहार्द कायम किया जा सके।

हेतराम गर्ग, कसुम्पटी-शिमला, हि.प्र.

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 7650000990

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को रक्षाबन्धन-स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस अगस्त 2025

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक पुण्यतिथि	1 अगस्त
रक्षाबन्धन पर्व/श्रावण पूर्णिमा	9 अगस्त
विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस	14 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	16 अगस्त
अहिल्या देवी होल्कर पुण्यतिथि	22 अगस्त
हरि तालिका तीज	26 अगस्त
श्रीगणेश चतुर्थी	27 अगस्त

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

संपादकीय

प्राकृत आपदा : सुरक्षा एवं सेवा

वर्तमान में पर्यावरण असंतुलन के दुष्परिणाम निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं। प्रकृति का प्रकोप भयावह बनता जा रहा है। विश्व में बढ़ती जनसंख्या का बोझ उठाने में धरा एवं प्रकृति स्वयं को असहाय अनुभव कर रही है। ग्लोबल वार्मिंग से संतप्त और ऊंचे एवं विशाल भवनों, चौड़ी सड़कों, रेलमार्गो, सुरंगों तथा असंख्य निर्माण कार्यों से विदीर्ण प्रकृति एवं उसकी धरती मानो अपना धीरज खो बैठी है। कहीं न कहीं मानव सृष्टि ही इसकी दोषी है। इस सच्चाई को हमें स्वीकार करना ही पड़ेगा कि अपनी ही भूल से अपनी बर्बादी होती है। ऐसी विषम परिस्थिति में हमें अपने देश एवं अपने राज्य में निजी तौर पर और सामाजिक स्तर पर जागरूक होने की आवश्यकता है। यह सही है कि राष्ट्र को विकसित करने के लिए पर्याप्त संसाधनों का होना जरूरी है। अतएव विकास हेतु निर्माण कार्यों की गति नहीं थम सकती तथापि यह आवश्यक हो जाता है कि ऐसी वैज्ञानिक विधियों का अन्वेषण एवं उपयोग हो, जिनसे प्रकृति में अधिक छेड़छाड़ करने की संभावना कम हो। किन्तु हमें यह सत्य भी स्वीकार करना होगा कि हम ऐसी विकट स्थिति में पहुँच चुके हैं कि भविष्य में इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं एवं संकटों को आने से टाला नहीं जा सकता। अब तो अपने हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्रों में बादलों का फटना और मूसलाधार वर्षा से भूस्खलन होना आम बात हो चुकी है। जहाँ बादल फटते हैं, वहाँ इतना अधिक पानी बरसता है कि छोटे-मोटे पर्वतीय नाले भी दरया बन जाते हैं और अपने संकीर्ण तटबन्धों को तोड़ कर पानी के तीव्र प्रवाह को कई बार हरे भरे गाँवों और जमीनों की ओर मोड़ देते हैं और पूरे गाँव, घर-बार और खेती को उजाड़ कर ले जाते हैं।

इस वर्ष की बरसात में ऐसी ही भयानक तस्वीर मण्डी जिला के सिराज क्षेत्र में देखने को मिली। इस क्षेत्र के कई गाँव इस बरसात में पूर्णत: उजड़ चुके हैं। सैंकड़ों लोग जमींदोज हो चुके हैं। कुल्लु, किन्नौर, चम्बा और स्पीति के कई स्थानों पर भी भारी नुकसान हुआ है तथा लोगों को अपनी जानें भी गंवानी पड़ी हैं। उत्तराखंड तथा अन्य पर्वतीय राज्यों को भी इन प्राकृत-आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है, साथ ही मैदानी क्षेत्रों को बाढ़ का दंश झेलना पड़ रहा है। जुलाई मास में घटित यह भीषण त्रासदी न केवल मौसम वैज्ञानिकों को अचंभित करती है, अपितु भविष्य के लिए सावधान होने का भी संकेत देती है।

अत एव न केवल केन्द्र तथा राज्य सरकारों को अपितु सम्पूर्ण समाज को आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता है। श्रीमद् भगवत गीता (6/5) भी कहती है कि मनुष्य स्वयं अपने द्वारा अपना कल्याण कर सकते हैं। क्योंकि मनुष्य ही स्वयं अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु। इसलिए हमारा यह कर्तव्य बन जाता है कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हम तत्पर हों, ऐसे वैज्ञानिक उपायों का अन्वेषण हो जिनसे पर्यावरण संतुलन बना रहे और विकास की गति भी बाधित न हो। विशेष रूप से यह भी हमारा कर्तव्य बन जाता है कि ऐसी संकट की घड़ी में हम उनके साथ खड़े हों जिन पर यह घोर-विपत्ति आई है। संतोष का विषय है कि इस संकट बेला में सरकार, सामाजिक संगठन तथा निजी तौर पर लोग अपना भरपूर सहयोग दे रहे हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिसका ध्येय 'सेवा ही संकल्प' है, अपने विविध संगठनों के माध्यम से राहत कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग ले रहा है। वह अपने स्वयंसेवकों को स्वयं स्फूर्ति से आगे आकर पीड़ितों की सहायता एवं सेवा करने की प्रेरणा देता है। सेवा भारती की समाज सेवा इस आपदा में आशा की किरण के रूप में प्रकट हुई है। सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने सूचना मिलते ही तत्काल आपदा स्थल पर पहुंचकर अभूतपूर्व सेवा कार्य किया। आपदा पीड़ितों को राहत सामग्री पहुंचाई गई। विस्थापितों की सहायता की तथा गुमशुदा लोगों को ढूंढने में मदद की। सैकड़ों कार्यकर्ता आज तक भी राहत सामग्री भेजने एवं वितरित करने में जुटे हुए हैं। आनुषांगिक संगठन विश्व हिन्दू परिषद के माध्यम से स्वयंसेवकों ने भी त्वरित गति से आपातकालीन सुविधा और पुनर्वास संबंधित कार्यों के लिए पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान किया। विश्व हिन्दू परिषद के सभी आयाम सेवा कार्यों एवं राहत सामग्री वितरित करने में जुटे रहे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने भी सुनील उपाध्याय एजुकेशनल ट्रस्ट (SUET) और सेवार्थ विद्यार्थी (SFS) के माध्यम से राहत कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लिया। संघ की अन्य सहयोगी संस्थाएं भी आपदा पीड़ितों की सहायता में जुटी हुई हैं। हिमाचल के जनमानस में संघ यह विश्वास उत्पन्न कर चुका है कि जब भी कोई विपदा आएगी तो संघ के स्वयंसेवक सबसे पहले अग्रिम पंक्ति में खड़े मिलेंगे।

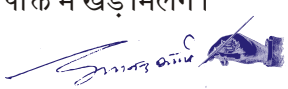

प्रकृति से छेड़छाड़ बरसात का कहर

डॉ. सपना चंदेल

वैदिक संस्कृति में मनुष्य प्रकृति का उपासक रहा है। सूर्य, धरती, आकाश को देवता मानकर पूजन किए जाने की परंपरा रही है। सभी प्राणियों का जीवन सुरक्षित होता आया है। इसलिए भारत की संस्कृति में प्रकृति की पूजा का विधान किया गया ताकि जल वायु की शुद्धि से पर्यावरण का संतुलन बना रहे और मनुष्य को जीवन के लिए उपभोग के योग्य आवश्यक साधन भी प्राप्त होते रहें। प्रकृति की गोद में सुख शांति की कल्पना करना और उसे भोगना मनुष्य के स्वभाव में रहा है। इसलिए शिक्षा रोजगार के साथ जीवन के लिए आवश्यक तत्वों को बनाए रखने को हमेशा सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की जाती रही है। धीरे-धीरे भौतिक विकास मनुष्य की भूख बढाने वाली इच्छाएं अधिक होने लगीं और अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अधिक से अधिक धन कमाने के लिए मनुष्य में जो पागलपन पैदा हुआ उसने मानवता को पीछे छोड़ दिया। वह स्वार्थवश प्रकृति का विनाश करने लगा।

वर्तमान में पेड़ पौधे, अन्न, फल, सब्जी,फसल की किस्मों को सुधारा जा रहा है। पैदावार बढ़ाने के लिए नई-नई उन्नत प्रजातियां तैयार की जा रही हैं लेकिन इन सब्जियों, वनस्पतियों, औषधियों का प्रयोग एवं उपभोग करने वाला जो एकमात्र प्राणी मनुष्य है, उसके सुधार की कोई चिंता नहीं की जा रही है। यह केवल शिक्षा और संस्कार से संभव है। भौतिक वाद की चकाचौंध में मनुष्य धन संपत्ति कमाने की मशीन बनता जा रहा है, और धन कमाने के बाद भी सुख शांति से दूर है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि संपन्नता के बाबजूद जीवन मे आनंद नहीं है। इसलिए मनुष्य अन्धाधुंध प्रकृति का उपभोग करने में अपना संतुलन खो चुका है जबकि भौतिक संसाधनों को जुटाने के साथ जीवन में धर्म तथा अध्यात्म की प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि मनुष्य इन संसाधनों का सही तरीके से उपभोग कर सके, न कि प्रकृति और स्वयं को विनाश की ओर ले जाए।

पहले गर्मी, बरसात और सर्दी हर मौसम में महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों के स्वास्थ्य का पूरी तरह से ध्यान रखा जाता था। तब मनुष्य के पास साधन भले ही कम रहे हों लेकिन वह प्रकृति के साथ अपनेपन से जुड़ा रहता था। मनुष्य प्रकृति का संहार करने वाला नहीं था, वह पालक था। जब से प्रकृति को भोग की वस्तु मानकर उसका संहार किया जाने लगा है, तब से विनाश की लीला देखने को मिल रही हैं।

एक कहावत है कि जल और आग के साथ खेल अच्छा नहीं। अर्थात् आग और पानी का प्रयोग सही तरीके से किया जाना चाहिए। उस के साथ जरूरत से ज्यादा छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए। अति किए जाने पर वह विनाश का कारण हो जाता है। वर्तमान में यही सब कुछ देखने सुनने को मिल रहा है। बरसातें पहले भी होती थीं। दरअसल मनुष्य पानी के रास्ते में आ गया है, पानी ने अपना रास्ता नहीं बदला है। नदियों, नालों के संगम पर तथा उनके किनारे बनाए गए हैं और भारी विनाश के बावजूद भी बार-बार मकान बाजार नदी-नालों में ही बनाए जा रहे हैं। हिमाचल में आज भी वनों का अवैध कटान हो रहा है। वन माफिया पेड़ों के कटान में लगा हुआ है, जो पर्यावरण के लिए सही नहीं है।

हिमाचल प्रदेश में बरसात में जो इमारती लकड़ियां बह कर आई हैं, उसने सारी पोल पट्टी खोल दी है। फिर भी सभी के मौन रहने से एक गहरा रहस्य बना हुआ है। हिमाचल के वनों से देवदार और बान के पेड़ गायब होते जा रहे हैं। अब तो खतरनाक पेड़ों की सूचियां बनाकर उन्हें धड़ल्ले से काटा जाने लगा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हिमाचल में अब जंगलों से देवदार काटकर गमलों में उगाए जाने लगे हैं।

जाहिर है बरसात तो हर साल आएगी। बरसात की तबाही के बाद पुनर्वास होगा लेकिन नदियों और नालों के बीच मकान बनाए जाने के प्रयास जारी रहेंगे तो इस आपदा से छुटकारा मिलना आसान नहीं होगा। इसलिए जरूरत है प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने की ताकि मानवता जिंदा रहे एवं पर्यावरण संरक्षित किया जा सके।◆◆◆

बृहत्तर भारत का स्वर्णिम इतिहास

चन्द्रगुप्त वेदालंकार

अपनी मातृसंस्था 'गुरुकुल काङ्गड़ी' में विद्याध्ययन करते हुए बचपन में ही गुरुमुख से कथाओं में सुना था, 'भारत सोने की चिड़िया है' कभी यह संसार का सिरमौर था। रघु ने दिग्विजय की थी, राम ने लङ्का जीती थी, अर्जुन ने पाताल देश तक विजय की थी। नालन्दा और तक्षशिला के विद्याकेन्द्र यहीं थे, जिनमें दूर-दूर के देशों से विद्यार्थीजन शिक्षा प्राप्त करने आया करते थे। प्रविष्ट न हो सकने पर हाथ मलते हुए, रोते-रोते अपने देशों को लौटा करते थे। ह्वेन-स्साङ् और फाहियान ने इन्हीं विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाई थी। चीनी लोग भारत को शाक्यमुनि का देश समझ इसकी तीर्थयात्रा को आया करते थे।

जब मैं कुछ बड़ा हुआ तो पता चला कि 'बृहत्तरभारत निर्माण' की अपनी उमङ्गों को भी भारतीयों ने चरितार्थ किया था। अशोक ने धर्मविजय करके मिश्र और यूनान तक अपनी संस्कृति फैलाई थी। अपने प्रिय पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को भगवान् बुद्ध का सत्य संदेश सुनाने सिंहलद्वीप भेजा था। कुस्तन और यश तुर्किस्तान में भारतीय संस्कृति को ले गये थे। कुछ प्रचारक चम्पा और मिश्र तक भी पहुँचे थे। मैंने यह भी पढ़ा कि देवानाम्प्रियतिष्य के समय जब सीलोन को आध्यात्मिक प्यास बुझाने के लिये कोई स्रोत ढूंढने की आवश्यकता हुई, तो उसने अशोक से प्रार्थना की। जब मिडती के समय चीनी सम्राट् को नये प्रकाश की चाह हुई, तो उसने बुद्ध की शरण ली। जब तिब्बत को आत्मिक उन्नति की तड़प अनुभव हुई, तो उसने शान्तरक्षित, पद्मसम्भव और अतिशा आदि भारतीय आचार्यों को ही निमन्त्रित किया। जब अरब को साहित्य, कला और विज्ञान की अभिलाषा हुई, तो उसने भारतीय पण्डितों और शास्त्रों का स्मरण किया। मृत्युशय्या पर पड़े हुए खलीफा के प्यारे भाई की चिकित्सा करने वाला जब सारे अरब में कोई ढूंढे न मिला, तो एक भारतीय वैद्य ने ही उसे मृत्यु के मुख से खींचकर बाहर निकाला। जब मङ्गोल सम्राट् कुबलेईखां को अनुवादकों की चाह हुई, तो उसने भारत पर दृष्टि डाली। कोरिया यदि असभ्य से सभ्य बना तो बौद्धधर्म के कारण। जापान की जागृति का मूल कारण बौद्धधर्म ही तो है।

मैंने यह भी पढ़ा कि जावा, कम्बोडिया, अनाम आदि तो हमारे उपनिवेश थे। वहां के राजा तो शिव, विष्णु और बुद्ध को पूजते थे । वेयन का शिवमन्दिर, अङ्गकोर का विष्णु- मन्दिर तथा बोरोबुदूर का बौद्धमन्दिर आज भी कला, विशालता और सौन्दर्य के लिये सुदूर भारत की झांकी दिलाते हैं। सुदूर पूर्व के प्रस्तर-खण्डों पर खुदी हुई रामायण, गीता तथा बुद्धचरित की अमर कथायें सहस्रों वर्षों प्राचीन हमारे साहसी प्रचारकों का आज भी स्मरण करा रही हैं। पढ़ते-पढ़ते मुझे यह भी प्रतीत हुआ कि किस प्रकार सहस्रों प्रचारक, सांसारिक सुखों को लात मार कर, सेवा का परमव्रत धारण कर उत्तुङ्ग ऊर्मिमालाओं, बीहड़ वनों, हिममण्डित शिखरों को पार कर, भारतीय धर्म, भाषा तथा सभ्यता से सर्वथा अपरिचित देशों में, अहिंसा, सेवा, सत्य और प्रेम का शुभ सन्देश सुनाना ही जीवन का चरम लक्ष्य बना कर चल पड़े। आगे चल कर मैंने ऐतिहासिकों में मानी जाती हुई इन स्थापनाओं को भी पढ़ा कि मिश्र और भारत के देवता मेल खाते हैं। उनमें आज भी यह परम्परा विद्यमान है कि हम पूर्व से पुण्ड देश (पाण्ड्य) से यहां आये हैं। चैल्डिया के लोगों में अब भी यह अनुश्रुति काम कर रही है कि हम चोल देश से आकर बसे हैं। कार्थेज के 'प्यूनिक' लोग निरुक्त में निर्दिष्ट भारत के 'पणि' हो तो थे। मैक्सिको में मयसभ्यता को विकसित करने वाले भारत से जाकर ही वहां बसे थे। आइसलैण्ड के प्राचीन निवासियों का धर्मग्रन्थ 'वलूस्पा' सम्भवत: ऋग्वेद ही तो है। पर्शिया के आर्य्य-लोगों ने अपनी भाषा और धर्म, भारत की भाषा और धर्म से ही तो लिये हैं। संसार की प्राचीन जातियों, हिट्टाईट्स और मिट्नी लोगों के देवता रुद्र, वरुण और नासत्य वैदिक देवता ही तो हैं। धर्म शिक्षा के प्रारम्भिक पाठों से, व्याख्याताओं के मुखों से, और भारत के अतीत गौरव को समझने वालों के सम्वादों से, मैं बहुधा मानव धर्मशास्त्र के इस प्रेरक सन्देश को सुनता रहा-

'एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः-
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः

इतिहास के अध्ययन से मुझे प्रतीत होने लगा कि कभी भारत भी संसार में अपना विस्तार कर चुका है। जापान से मिश्र तक, बाली से यूनान तक बृहत्तर भारत का विशाल भवन खड़ा था। ◆◆◆

समाज सेवा का पर्याय - सेवा भारती

आपदा में आशा की किरण

आपदा प्रभावित क्षेत्र और स्थिति का अवलोकन

आपदा की गंभीरता को समझने के लिए नीचे दिए गए आंकड़ों पर ध्यान देना आवश्यक है :

कुल गांव प्रभावित	:	125
कुल परिवार प्रभावित	:	930
पूर्णत: क्षतिग्रस्त घर	:	300+
आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त घर	:	450+
पूर्णत: क्षतिग्रस्त गौशालाएं	:	400+
थुनाग क्षेत्र में पूर्णत: क्षतिग्रस्त दुकानें	:	170+

इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि लोगों के जीवन का आधार उनका घर, व्यवसाय और पशुपालन सब कुछ इस आपदा में छिन गया है। किंतु जहाँ शासन की सीमाएं हैं, वहीं सेवा भारती जैसी संस्थाएं आशा का दीपक लेकर खड़ी हो जाती हैं।

हाल ही में हिमाचल प्रदेश के पांच जिलों में आई प्राकृतिक आपदा ने जनजीवन को पूरी तरह से अस्त-व्यस्त कर दिया। 125 गांवों और 930 से अधिक परिवार प्रभावित हुए हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, 300 से अधिक घर पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हुए हैं, जबकि 450 से अधिक घर आंशिक रूप से प्रभावित हुए हैं। 400 से अधिक गौशालाएं भी पूरी तरह नष्ट हो चुकी हैं, और थुनाग क्षेत्र में 170 से अधिक दुकानें समाप्त हो गई हैं।

सेवा भारती का सेवा अभियान : एक प्रेरणा

इस संकट की घड़ी में सेवा भारती और संघ के स्वयंसेवकों ने अभूतपूर्व सेवा कार्य किया। 2 जुलाई से 75 कार्यकर्ता थुनाग, पंडोह, गोहर और जंजैहली में सक्रिय हैं। इसके अतिरिक्त, पांच अन्य जिलों में 80 से 90 कार्यकर्ता राहत सामग्री भेजने और वितरित करने में लगे हुए हैं। सेवा भारती द्वारा अब तक 543 तरपाल, 1,837 राशन किट, 100 बिस्तर किट, 350 कंबल, 258 बर्तन किट, 500 चप्पल सहित 350 सोलर लाइटें वितरित किए जा चुके हैं। गौवंश के लिए चोकर और फीड भी पहुंचाया गया है।

सेवा भारती हिमाचल एवं नोफल संस्था द्वारा जंजैहली क्षेत्र में 12 जुलाई से 31 जुलाई तक प्रतिदिन 700-800 लोगों के लिए दो समय का भोजन प्रदान किया गया। भारत विकास परिषद् द्वारा भेजे गए 8 टन रेडी-टू-ईट भोजन में से 2 टन सामग्री वितरित की जा चुकी है। सेवा भारती का यह समर्पित प्रयास न केवल राहत पहुंचाने का कार्य है, बल्कि समाज में विश्वास, अपनत्व और मानवता की भावना को पुनर्जीवित करने का भी प्रतीक है।

संगठनात्मक विशेषताएं : सेवा भारती की इस संपूर्ण गतिविधि को सफल बनाने में निम्नलिखित विशेषताएँ प्रमुख रही हैं :

तेज़ प्रतिक्रिया : आपदा के तुरंत बाद मात्र कुछ घंटों में कार्यकर्ताओं ने पहुँचकर ज़मीनी स्थिति का आकलन किया और राहत कार्यों की योजना बनाई।

वितरित सामग्री का संक्षिप्त विवरण

सामग्री	वितरण संख्या
तिरपाल	543
फोन सीट	140
कुकर	50
बर्तन किट	258
चप्पल-वस्त्र	500
राशन सामग्री	1837
कंबल	350
छाता	20
चोकर-फीड (225 गायों हेतु)	उपलब्ध

सेवा भारती 5000 मेडिकल किट, 100 गैस चुल्हे लोगों को पहुंचा रही है। अभी कुछ टोलियां सर्वेक्षण कर रही है, जहां पर ज्यादा क्षति हुई होगी उनके लिए 5000 मेडिकल किट, 300 बिस्तर की किट 500 सोलर लाइट, 500 तिरपाल, 200 गैस चुल्हे अभी उपलब्ध है, जिन्हें उचित व जरूरतमंद परिवारों को उपलब्ध कराया जाएगा

सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने लंगर व्यवस्था नोफल संस्था के साथ की। इस दौरान प्रतिदिन 700-800 लोगों को दो समय का भोजन दिया। इसके अलावा रेडी टू ईट फूड (भारत विकास परिषद) की ओर से 8 टन भिजवाया गया, इसमें से अभी तक 2 टन वितरित किया जा चुका है।

स्थानीय समन्वय : विभिन्न गांवों के स्थानीय कार्यकर्ताओं को जोड़कर वितरण प्रणाली को अत्यंत प्रभावी बनाया गया।

पारदर्शिता : सभी वितरण गतिविधियाँ पारदर्शी रूप से संचालित की गईं ताकि समाज में विश्वास बना रहे।

सहयोग भावना : भारत विकास परिषद, नोफल संस्था, लघु उद्योग भारती जैसे अन्य संगठन सेवा भारती हिमाचल के साथ मिलकर काम करने के लिए आगे आए।

भावनात्मक जुड़ाव : राहत सामग्री केवल वस्त्र या राशन तक सीमित नहीं रही, कार्यकर्ताओं ने पीड़ितों के साथ समय बिताया, उन्हें ढांढ़स बंधाया और उनके पुनर्निर्माण के आत्मविश्वास को पुनर्जीवित किया।

इस संकट में **सेवा भारती** ने यह दिखाया कि 'आपदा में अवसर' केवल अर्थव्यवस्था की नहीं, समाज निर्माण की बात है। संकट के समय जब समाज के हर वर्ग से लोग टूटते हैं, तब सेवा भारती जैसे संगठन उन्हें सहारा देते हैं मात्र सामग्री से नहीं, बल्कि अपनत्व और संवेदना से।

सेवा भारती की आगामी योजना

स्थायी पुनर्वास : जिन परिवारों के घर पूर्ण रूप से नष्ट हो चुके हैं, उनके लिए स्थायी आवास हेतु सरकार और समाज के साथ समन्वय।

गौशाला पुनर्निर्माण : पशुधन संरक्षण के लिए अस्थायी गोशालाएं और चारा वितरण केंद्र स्थापित करना।

बाल शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिविर : प्रभावित बच्चों के लिए अस्थायी विद्यालय और चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराना।

मानसिक सहयोग : पीड़ितों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए काउंसलिंग सेवाएं शुरू करना।

सेवा भारती के संगठन मंत्री श्रीमान राकेश जी का कहना है कि उनका यह अभियान केवल राहत वितरण नहीं, समाज के पुनर्निर्माण की दिशा में एक महायज्ञ है। जिस प्रकार संगठन ने बिना भेदभाव, बिना प्रचार के यह कार्य किया है, वह सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए प्रेरणास्रोत है। हमारा आह्वान है कि हर नागरिक इस पुनर्निर्माण में सेवा भारती का सहभागी बने। क्योंकि जब समाज एक साथ चलता है, तभी राष्ट्र सशक्त बनता है।◆◆◆

आपदा में राहत-पुनर्वास में सहयोगी संस्थाएं

- भारत विकास परिषद हिमाचल
- अपना घर आश्रम दिल्ली
- राष्ट्रीय सेवा भारती दिल्ली
- नोफल एक उम्मीद हिमाचल
- ठाकुर राम सिंह स्मृति न्यास हमीरपुर
- हेडगेवार स्मारक समिति ऊना
- हिमाचल शिक्षा समिति
- कंपनी सर्विस नाऊ बैंगलौर
- सेवा भारती जगाधरी
- सेवा भारती दिल्ली
- बॉट श्रेयसी मंडी
- हेडगेवार स्मारक समिति शिमला
- लघु उद्योग भारती हिमाचल
- विद्या देवी ट्रस्ट दिल्ली

आपदा में सेवा समाज में संस्कार

हिमाचल प्रदेश में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सेवा कार्यों में अग्रणी

डॉ. राकेश कुमार शर्मा

प्राकृतिक आपदाएँ न केवल भौतिक क्षति पहुंचाती हैं, बल्कि समाज को एकजुट होकर पुनर्निर्माण की भावना से कार्य करने का अवसर भी देती हैं। भारत के पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश में जब भी संकट की घड़ी आई है, तब विभिन्न संगठनों ने अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाते हुए सेवा कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया है। ऐसा ही एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) ने सुनील उपाध्याय एजुकेशनल ट्रस्ट (SUET) और अपनी गतिविधि सेवार्थ विद्यार्थी (SFS) के माध्यम से, जिन्होंने न केवल आपदा राहत कार्यों में बल्कि सामाजिक पुनर्निर्माण और सेवा संस्कारों के प्रसार में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 30 जून 2025 को हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले का सराज क्षेत्र एक भयानक प्राकृतिक आपदा की चपेट में आया। भारी बारिश और बादल फटने के कारण कई गाँवों में मकान, दुकानें, पशुधन, खेत-खलिहान, बाग-बगीचे पूरी तरह नष्ट हो गए। कुछ लोगों की मृत्यु हुई और कई अभी भी लापता हैं। इस त्रासदी ने क्षेत्र को आर्थिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से झकझोर कर रख दिया। ऐसे संकट के समय में जब सरकारी तंत्र सीमित संसाधनों के कारण हर कोने तक नहीं पहुँच पा रहा था, तब अभाविप, SUET और SFS ने संयोजित और त्वरित प्रयासों के माध्यम से आपदा राहत कार्यों को अंजाम दिया। आपदा के तुरंत बाद अभाविप कार्यकर्ता, सुनील उपाध्याय एजुकेशनल ट्रस्ट और सेवार्थ विद्यार्थी के स्वयंसेवक सराज के बाड़ा, मुसरानी, बस्सी, मुरहाग, शरण, सरोआ जैसे दूरदराज के क्षेत्रों में पहुंचे। इन क्षेत्रों में चादर, कंबल, बर्तन, तथा राशन सामग्री का वितरण किया गया। साथ ही देजी पंचायत के लिए विशेष रूप से राशन भेजा गया। शिमला, मंडी और सुंदरनगर के स्वयंसेवकों ने मिलकर तीन वाहन राहत सामग्री (वस्त्र, खाद्य पदार्थ, दैनिक उपयोग की वस्तुएँ) विभिन्न गाँवों में भेजे। इसके अतिरिक्त सोच फाउंडेशन के माध्यम से 450 से अधिक कंबल और चादरें एकत्र की गईं और जरूरतमंद परिवारों को प्रदान की गईं। सुनील उपाध्याय एजुकेशनल ट्रस्ट एवं रॉयल टच टाइल्स नेरचौक ने जरोल, कुर्शाली, नरोट, जेरेड जैसे गाँवों में बर्तन, राशन और कंबल वितरित किए। ग्राम पंचायत परवाड़ा के पटीकरी, मझोल, तलवाड़ा और परवाड़ा गांवों में भी राहत सामग्री का व्यापक वितरण किया गया। स्थानीय महाविद्यालय लंबाथाच में आए मलबे की सफाई भी स्वयंसेवकों द्वारा की गई। गोहर की स्यांज पंचायत में प्रभावित परिवारों को राहत सामग्री के साथ-साथ

जिनके घरों में दरारें आई थीं, उन्हें तरपालें प्रदान की गईं। थुनाग और बग्गी में दो आपदा राहत/ संग्रहण केंद्र स्थापित किए गए हैं , जहां से राहत कार्यों का समन्वय किया जा रहा है और प्रयास किया जा रहा है कि जरूरतमंदों तक सहायता पहुंचाई जा सके।

विद्यार्थी परिषद का मानना है कि इस क्षेत्र में पुनर्वास का कार्यक्रम अभी अगले कई महीनों तक चलाना पड़ेगा जिस कारण बग्गी में आपदा राहत के लिए वस्तु एवं अन्य सेवाओं के लिए संग्रहण केंद्र खोला गया है। इसी तरह धर्मपुर के स्याठी गाँव के 20 परिवारों को तत्काल राहत सामग्री कार्यकर्ताओं द्वारा पहुँचा दी गई। सेवार्थ विद्यार्थी, जिसका उद्देश्य सिर्फ राहत सामग्री देना नहीं बल्कि सेवा के संस्कार को युवाओं में जाग्रत करना है, बीते वर्षों हिमाचल में सामाजिक जागरूकता, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्रों में अत्यंत प्रभावी रहा है।

आपदा प्रभावितों के लिए राहत कोष अभियान

जब संकट छाया हिमाचल पर
विश्व हिंदू परिषद पहुँची हर द्वार पर

विश्व हिंदू परिषद हिमाचल प्रांत के द्वारा हिमाचल प्रांत में आई आपदा के समय सेवा विभाग के मार्गदर्शन में लोगों के लिए आपातकालीन सुविधा एवं पुनर्वास संबंधित कार्यों के लिए पूर्ण रूप से सहयोग किया। जहां पर आपदा परिवारों के लिए मुश्किल की घड़ी में विश्व हिंदू परिषद ने एक गिलहरी प्रयास करने की कोशिश की है। जिसमें विश्व हिंदू परिषद के सभी आयामों के द्वारा मिलकर इस दर्द को बांटने का कार्य किया गया। इसमें विश्व हिंदू परिषद प्रांत टोली एवं मंडी विभाग के माध्यम से 127 परिवारों के लिए बिस्तर की व्यवस्था की गई। जिसमें एक दरी,गद्दा,चद्दर ,तकिया ,कंबल रजाई की व्यवस्था की गई जो सभी परिवारों को स्वयं विश्व हिंदू परिषद की टोली ने वितरित किए। इसके साथ विश्व हिंदू परिषद प्रान्त के माध्यम से 2 लाख से अधिक की दवाएं थुनाग की प्रभावित 6 पंचायतों में वितरित की गई जिससे बहुत से लोगों को आपातकाल स्थिति में विश्व हिंदू परिषद ने वहां पर दवाई की व्यवस्था की। इसके साथ विश्व हिंदू परिषद के बजरंग दल के कार्यकर्ताओं के द्वारा 100 परिवारों को राशन सामग्री बांटी गई जिसमें दैनिक प्रयोग में लाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु को रखा गया। इसके साथ 50 परिवारों के लिए महिलाओं के लिए कपड़ों की व्यवस्था की गई एवं अन्य राहत सामग्री दी गई।

आपदा की इस कठिन घड़ी में विश्व हिंदू परिषद, हिमाचल प्रांत ने समर्पित सेवाभाव के साथ पीड़ित परिवारों की सहायता हेतु हर संभव प्रयास किया। भोजन, वस्त्र, दवाइयां, बिस्तर, बर्तन और अन्य आवश्यक सामग्री के माध्यम से राहत पहुँचाई गई। संगठन के विभिन्न आयामों ने मिलकर जन-जन के दुःख को अपना मानते हुए सेवा कार्य में सक्रिय भागीदारी निभाई। यह सेवा एक गिलहरी प्रयास तो है, परंतु मानवता और संगठन शक्ति का अनुपम उदाहरण भी है। परिषद का हर कार्यकर्ता भविष्य में भी पूर्ण पुनर्वास तक इन परिवारों के साथ खड़ा रहेगा। विश्व हिंदू परिषद सेवा को ही धर्म मानते हुए सतत समर्पित है।

इस सेवा में विश्व हिंदू परिषद गौ रक्षा विभाग भी पीछे नहीं रहा। उन्होंने भी 100 परिवारों के लिए दैनिक उपयोग में आने वाले बर्तनों की व्यवस्था, श्री राधे कृष्णा कामधेनु गौशाला कारयलग बिलासपुर के मार्गदर्शन में 100 परिवारों के लिए बाल्टी, थाली, गड़वी चम्मच, कपड़े, जूते, पानी के लिए बर्तन एवं अन्य राहत सामग्री की भी सेवा की। शिमला विभाग के माध्यम से एक बड़े ट्रक में प्रभावित क्षेत्र के लिए कपड़ों से संबंधित सेवा भेजी गई। इस आपातकालीन आपदा की स्थिति में विश्व हिंदू परिषद प्रांत के सभी दायित्ववान् कार्यकर्ता एवं विभाग, जिला एवं प्रखंड के कार्यकर्ता इस कार्य में प्रत्यक्ष एवम् अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहे। जिसमें से 20 कार्यकर्ता थुनाग क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप पर कार्य कर रहे थे एवं विभिन्न जिलों में 30 कार्यकर्ता राहत सामग्री की योजना में प्रत्यक्ष रूप पर कार्य कर रहे थे। उपरोक्त सभी व्यवस्थाओं में हिमाचल प्रांत टोली के साथ क्षेत्रीय मंत्री लेखराज राणा का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन रहा। विश्व हिंदू परिषद् इस आपदा के समय में उन सभी परिवारों के दुख में सम्मिलित हैं। भविष्य में इन परिवारों के सहयोग के लिए विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता वचनबद्ध है। ◆◆◆**लेखक विहिप हिमाचल प्रांत के सेवा प्रमुख है।**

आपदा में विश्व हिन्दू परिषद् के सेवा कार्य

जब प्रकृति ने कहर बरपाया, तब विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता सेवा का संकल्प लेकर मैदान में उतरे, हाथों में राहत सामग्री, दिलों में करुणा और मन में बस एक ही उद्देश्य – हर पीड़ित तक मदद पहुँचे, कोई भूखा न रहे, कोई अकेला न पड़े। राशन से लेकर बिस्तर, दवाइयों से लेकर वस्त्र और बर्तनों तक, हर जरूरतमंद तक स्वयं जाकर सहायता पहुँचाई गई और यही है वह सेवा भाव जो हमें धर्म से जोड़ता है।

हिमाचल आपदा : 'अपनापन ही असली राहत है!'

हंसराज रघुवंशी ने 11 लाख रुपये की सहायता

हिमाचल की धरती पर एक बार फिर साबित हुआ कि संकट की घड़ी में अपनों से बढ़कर कोई नहीं होता। जब बाहर से आए सितारे खामोश रहे, तब हिमाचली कलाकारों ने दिल खोलकर मदद की। हंसराज रघुवंशी ने 11 लाख रुपये की सहायता देकर न केवल राहत पहुंचाई, बल्कि मानवता की मिसाल पेश की। ममता भारद्वाज और कुलदीप शर्मा जैसे कलाकारों ने ज़रूरतमंदों को वस्त्र और राशन उपलब्ध करवाया। मंडी के ड्राइविंग स्कूलों ने भी सहयोग का हाथ बढ़ाया। यह एक सच्चा उदाहरण है कि जब दिल में अपनापन हो, तो हर मुश्किल आसान हो जाती है।◆◆◆

अभिनय से संवेदना का स्वर बने कपिल

जब शब्दों से दिल न पिघले, तब मंच पर उतरा अभिनय भावनाओं को जगा देता है। मंडी के कपिल देव शर्मा ने नाटक के माध्यम से आपदा की त्रासदी को जीवंत कर लोगों के मन को झकझोर दिया। 'मलबे में दबी उम्मीद' शीर्षक नाटक से उन्होंने दर्शकों को यह संदेश दिया कि एक छोटा सा योगदान भी किसी की टूटी उम्मीद को फिर से जीवन दे सकता है। उनकी यह प्रस्तुति सिर्फ एक नाटक नहीं, बल्कि मानवता की पुकार है। कपिल का यह प्रयास दिखाता है कि कला सिर्फ मनोरंजन नहीं, समाज के लिए परिवर्तन की प्रेरणा भी बन सकती है।◆◆◆

आयुष-उपदेश ने 20 लाख जुटाकर पेश की मिसाल

जब नेता और सेलिब्रिटी मौन रहे, तब आयुष ठाकुर और उपदेश ठाकुर जैसे युवाओं ने अपने कर्मों से मिसाल कायम की। सोशल मीडिया की ताकत का सकारात्मक उपयोग करते हुए तीन दिनों में 20 लाख रुपये जुटाकर आपदा प्रभावितों तक मदद पहुंचाई। इन युवाओं ने दिखा दिया कि सेवा भाव उम्र या पद का मोहताज नहीं होता। आयुष की मंडयाली कॉमेडी और उपदेश का 'द हिमाचली पॉडकास्ट' न केवल मनोरंजन का माध्यम हैं, बल्कि समाज के लिए प्रेरणा बन चुके हैं। यह उदाहरण हर उस व्यक्ति के लिए सीख है, जो बदलाव लाने की क्षमता रखता है – चाहे मंच कोई भी हो।◆◆◆

संजय ने वायदे के मुताबिक एकत्रित किए 7 लाख

छोटी उम्र, बड़ा काम – इस कहावत को साकार किया सैंज के युवा ब्लॉगर संजय चौहान ने। सोशल मीडिया को हथियार बनाकर उन्होंने महज कुछ दिनों में 7 लाख रुपये जुटाए और आपदा पीड़ितों को सौंपे। संजय ने न केवल मदद का वादा किया, बल्कि एक हफ्ते बाद लौटकर उसे निभाया भी। उनका समर्पण यह साबित करता है कि सेवा का जज़्बा उम्र का मोहताज नहीं होता। अपने कर्मों से उन्होंने यह दिखा दिया कि यदि दिल में संवेदना और इरादा मजबूत हो, तो एक अकेला इंसान भी उम्मीद की रोशनी बन सकता है। संजय आज युवाओं के लिए सच्ची प्रेरणा हैं।◆◆◆

'मैं एक डॉक्टर हूं और अपने मरीज को मरता नहीं देख सकती। उसकी आंखों में आंसू देखूं, तो खुद को रोक नहीं पाती... जो गरीब लोग हैं, जिनके पास ईलाज के लिए पर्याप्त पैसे भी नहीं होते, उनकी सहायता, सेवा करना अच्छा लगता है और मेरे दिल को एक सुकून मिलता है।'

डॉ. अनिकिता शर्मा

आधुनिकता की होड़ में बहुत कुछ बदल गया है। चाल चलन चरित्र व्यवहार सब कुछ लेकिन फिर भी बहुत कुछ अभी तक बचा हुआ है, जो इस धरती का भार संभाले हुए है, और इसी के सहारे संसार चल रहा है। रिश्ते नाते, कर्तव्य अधिकार में काफी बदलाव होते हुए दिखाई पड़ रहे हैं लेकिन डॉ. अनिकिता शर्मा एक समर्पित व्यक्तित्व आज भी हैं, जो अपने अधिकार और कर्तव्य को धर्म समझकर निभाती हैं और आम जनों के लिए प्रेरणा बन जाती हैं। उनके लिए नौकरी केवल पैसा कमाने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज सेवा और जन कल्याण का एक अवसर है, जिसका भरपूर लाभ उठाते हुए ऐसे समाजसेवी व्यक्तित्व जनकल्याण के लिए समर्पित रहते हैं और सभी के लिए आदर्श बन जाते हैं। ऐसा ही एक चेहरा हमेशा सादगी, करुणा और आत्मीयता के साथ नजर आता है। कोई विशेष वेशभूषा नहीं, कोई तामझाम नहीं, और न ही सोशल मीडिया पर तस्वीरों की भीड़। लेकिन इस डॉक्टर की मौजूदगी ही मरीजों के लिए सबसे बड़ी राहत बन जाती है। अधिकांश लोग इसी डॉक्टर से अपना इलाज करवाना चाहते हैं क्योंकि उनका अच्छा व्यवहार, मरीजों के साथ हमदर्दी और सबको स्वास्थ्य का लाभ देने का जुनून हमेशा दिखाई देता है।

डॉक्टर होना अनिकिता के लिए सिर्फ पेशा नहीं, बल्कि एक पवित्र जिम्मेदारी है, एक ऐसी सेवा जो दिल से निभाई जाती है, हर दिन, हर क्षण। सरकारी अस्पताल के वही गलियारे, जहां आमतौर पर मरीज खुद को मात्र एक नंबर या फॉर्म समझ बैठते हैं, और डॉक्टर तक पहुंचना मरीजों के लिए हमेशा एक चुनौती बनी रहती है, वहां यह महिला डॉक्टर किसी की आंखों में झांक कर अपनेपन से कहती हैं 'मैं हूं न... घबराइए मत' और यकीन मानिए, बस इतना सुनते ही दर्द थोड़ा कम होने लगता है। जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष में यह महिला डॉक्टर नया जीवन देने में अक्सर कामयाब रहती है। बचपन में अनिकिता जब भी मां के साथ अस्पताल जाती थी, तो मरीजों के साथ डॉक्टरों के व्यवहार को बड़े गौर से देखती थी। उन्हें वे डॉक्टर सबसे अच्छे लगते थे जो मरीजों के साथ आत्मीयता से पेश आते थे। उनकी मां का इलाज कर रहे एक डॉक्टर ऐसे ही थे, शालीन, सुलझे हुए और बेहद मानवीय। मां हमेशा कहती थीं – सुन, अबकी बार भी उसी डॉक्टर को दिखाना...वो अच्छे से समझाते हैं और उनकी दी गई दवाई पूरा असर करती है। तभी अनिकिता ने तय कर लिया कि उन्हें भी गरीबों की सेवा के लिए डॉक्टर बनना है। अब भी हर महीने अपने वेतन का एक हिस्सा अनिकिता उन मरीजों के इलाज पर खर्च करती हैं, जो गरीबी के कारण इलाज का खर्च नहीं उठा सकते। न कोई घोषणा, न कोई पोस्ट, न कोई फोटो... बस चुपचाप इंसानियत निभाते रहना उनकी आदत है।

कोविड के दिनों में, जब पीपीई किट पहनकर भी डॉक्टर कोरोना की महामारी के डर से पीछे हटने लगे थे, तब अनिकिता हर दिन कोविड वार्ड में पहुंचती रहीं, उस समय जहाँ मौत साया बनकर घूम रही थी। सिर पर दो बेटियों की परवरिश की जिम्मेदारी भी थी, लेकिन एक डाक्टर मां के लिए दूसरा कोई विकल्प नहीं था। उन्होंने मरीजों की सेवा के लिए ऑक्सीमीटर से लेकर ऑक्सीजन कंसंट्रेटर भी जुटाए, क्योंकि उनके लिए 'इंसानियत' ही सबसे बड़ा सहारा था और कोरोना वायरस से पीड़ित लोगों की जान को बचाने का मजबूत इरादा भी।

हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले की घुमारवीं तहसील से संबंध रखने वाली डॉ. अनिकिता शर्मा इस समय नाहन मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा घुमारवीं से ही प्राप्त की। उनकी माता, बीना शर्मा, एक सेवानिवृत्त शिक्षिका हैं। डॉ. अनिकेता ने एमबीबीएस की डिग्री कांगड़ा स्थित टांडा मेडिकल कॉलेज से हासिल की, जिसके बाद उन्होंने शिमला के प्रतिष्ठित आईजीएमसी से मेडिसिन में एमडी किया। ◆◆◆

सोशल मीडिया मीट 2025 का शिमला में सफल आयोजन

सोशल मीडिया को संस्कृति और सामाजिक मूल्यों के संरक्षण की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता : श्रीमान चंद्र प्रकाश

विश्व संवाद केंद्र, शिमला द्वारा सोशल मीडिया मीट 2025 का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रांत प्रचार प्रमुख श्रीमान प्रताप समयाल जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। यह आयोजन राज्य की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और सामाजिक मूल्यों के प्रचार के उद्देश्य से किया गया। इस कार्यक्रम में पूरे प्रदेश के विभिन्न जिलों से सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स, यूट्यूबर्स और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स के करीब 150 सक्रिय उपयोगकर्ता शामिल हुए। यह आयोजन दो सत्रों में किया गया। पहला सत्र सुबह 10.30 बजे से 12.30 बजे तक चला, जबकि दूसरा सत्र 1.00 बजे शुरू हुआ और 2 बजे तक चला। पहले सत्र में प्रदेश से आए सभी सोशल मीडिया हैंडलर्स, यू टयूबर्स एवं इंन्फ्लूएंसर्ज का परिचय हुआ। जबकि दूसरे सत्र में इन सभी इन्फ्लूएंर्स के साथ समसामयिक विषयों पर चर्चा की गई। दूसरे सत्र में प्रांत कार्यवाह श्रीमान चन्द्र प्रकाश जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उन्होंने उपस्थित सभी सोशल मीडिया हैंडलर्स से आह्वान किया कि सोशल मीडिया सामाजिक सरोकारों के साथ-साथ समसामायिक विषयों पर भी कार्य करें। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है। संघ ने हमेशा ही देश-प्रदेश की संस्कृति एवं परंपराओं को बचाने एवं संरक्षित रखने का काम किया है। शताब्दी वर्ष में भी पांच अहम बिंदुओं पर कार्य किया जाएगा। उन्होंने समाज में पंच परिवर्तन विषयों पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि सामाजिक समरसता, परिवार प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वत्व का भाव एवं नागरिक कर्त्तव्य पर भी काम करने की आज नितांत आवश्यकता है। आप सभी भी

सकारात्मक कंटेंट तैयार करें और समाज में सकारात्मकता एवं जागरूकता लाने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य डिजिटल मीडिया के जिम्मेदार और रचनात्मक उपयोग के माध्यम से सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक संरक्षण को प्रोत्साहित करना है।

उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया मीट 2025 न केवल एक संवाद का मंच साबित हुआ, बल्कि यह राज्य के युवाओं में सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और तकनीक के सकारात्मक उपयोग की भावना को भी सशक्त करने वाला कदम बना है। इस अवसर पर प्रांत प्रचार सह प्रमुख श्रीमान मोतीलाल, शिमला विभाग प्रचार प्रमुख श्रीमान कुलदीप, सोशल मीडिया आयाम के प्रांत प्रमुख कमल ठाकुर, प्रांत प्रचार टोली के कार्यकर्ता विशेष रूप से उपस्थित रहे। ◆◆◆

प्रदेश की सबसे कम उम्र की ब्लॉगर है सुहानी

हिमाचल में आयोजित सोशल मीडिया मीट में भाग लेने वाली प्रदेश की सबसे कम उम्र 9 साल की ब्लॉगर सुहानी शर्मा ने अपने परिचय में कहा कि आज की पीढ़ी धीरे-धीरे अपने बुजुर्गों से दूरी बना रही है, जो चिंताजनक है। उन्होंने कहा कि बच्चे और बुजुर्ग दोनों ही देखभाल के अधिकारी होते हैं, क्योंकि दोनों ही जीवन के उस पड़ाव पर होते हैं जहाँ उन्हें विशेष स्नेह और सहयोग की आवश्यकता होती है।

सुहानी का ब्लॉग मुख्य रूप से संयुक्त परिवार प्रणाली और बुजुर्गों की देखभाल पर केंद्रित है। उन्होंने बताया कि वह हर ब्लॉग में अपने दादा-दादी को साथ लेकर ब्लॉगिंग करती हैं, ताकि समाज में बुजुर्गों के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दिया जा सके।

सरस्वती विद्या मंदिरों में पांच परिवर्तन अभियान की घोषणा

विद्या भारती हिमाचल प्रांत की वार्षिक प्रेस वार्ता शिमला में आयोजित हुई। इस अवसर पर प्रांत अध्यक्ष मोहन सिंह ने वर्ष भर की गतिविधियों, उपलब्धियों और भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विद्या भारती हिमाचल के सरस्वती विद्या मंदिरों में चल रहे 186 विद्यालयों को 'भारत 2047' के दृष्टिकोण से परिवर्तन की दिशा में कार्य करने हेतु प्रेरित किया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत पाँच प्रमुख परिवर्तन अभियानों को प्रस्तुत किया गया है—सामाजिक समस्याएं, परिवार प्रबोधन, भारतीयता आधारित नागरिकता बोध और नारी सम्मान।

प्रांत अध्यक्ष ने बताया कि वर्तमान में प्रदेश में कुल 186 विद्यालय कार्यरत हैं, जिनमें से 141 ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों को न केवल शैक्षणिक ज्ञान दिया जाता है, बल्कि उन्हें संवाद, आत्मनिर्भरता, जीवन मूल्य, नैतिक शिक्षा और राष्ट्रभक्ति के संस्कारों से भी सुसज्जित किया जाता है। संगठन ने यह भी स्पष्ट किया कि विद्यालय केवल शिक्षा का माध्यम नहीं, बल्कि समाज निर्माण का केंद्र हैं। इस दिशा में समाज के सभी वर्गों से सहयोग की अपील की गई है।

प्रेस वार्ता में यह भी बताया गया कि इन अभियानों के अंतर्गत विशेष रूप से स्वस्थ बालक-बालिका, आत्मनिर्भर भारत, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी जीवन शैली और सामाजिक समरसता जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। संगठन का प्रयास रहेगा कि विद्यार्थी केवल किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी समझें और उस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाएं।◆◆◆

रामायण की पुण्य कथा से गूंज उठा राधाकृष्णन कॉलेज

छात्रों की मनमोहक प्रस्तुति ने छू लिया हर दिल

सर्वपल्ली राधाकृष्णन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, रामपुर बुशहर में आयोजित वार्षिक उत्सव के दौरान छात्रों द्वारा प्रस्तुत 'यह रामायण है पुण्य कथा श्रीराम की' ने समस्त दर्शकों को भावविभोर कर दिया। इस मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुति में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से जुड़ी विविध घटनाओं को नाट्य व संगीत के माध्यम से जीवंत किया गया। छात्रों की इस सुंदर प्रस्तुति ने न केवल उत्सव में धार्मिक और सांस्कृतिक रंग भरा, बल्कि समाज में सनातन मूल्यों का, धर्म, कर्तव्य, करुणा और मर्यादा का संदेश भी गहराई से प्रसारित किया। कार्यक्रम में उपस्थित अभिभावकों, शिक्षकों व अतिथियों ने छात्रों के प्रयासों को सराहा की और इस प्रयास को नवपीढ़ी में सांस्कृतिक जागरूकता व आस्था की ओर एक सकारात्मक कदम बताया। कॉलेज के प्राचार्य ने कहा कि ऐसी प्रस्तुतियाँ न केवल मनोरंजन का साधन होती हैं, बल्कि सनातन संस्कृति की अमूल्य विरासत को युवा पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम भी बनती हैं।◆◆◆

गौ सेवा सच्ची राष्ट्र सेवा

जिला मंडी में आई प्राकृतिक आपदा के दौरान, मलवे में कई घंटों से दबी हुई एक गौ माता को राष्ट्रीय हिन्दू वाहिनी संघ के कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय लोगों के अथक प्रयासों से जीवित अवस्था में सफलतापूर्वक रेस्क्यू किया गया। यह घटना न केवल साहस और करुणा का प्रतीक है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि जब हम सभी मिलकर कार्य करते हैं, तो हर प्राणी की रक्षा संभव है। इस पुण्य कार्य में जुटे सभी वीर साथियों को राष्ट्रीय हिन्दू वाहिनी संघ साधुवाद व धन्यवाद प्रेषित करता है। आइए, हम सभी ऐसे ही समस्त प्राणियों की सेवा और रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें।◆◆◆

खराब बाइक से बना दी कार

हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले के राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) गरनोटा के मेकेनिक मोटर व्हीकल और मेकेनिक इलेक्ट्रिक व्हीकल के विद्यार्थियों ने बेकार हो चुकी बाइक से अनोखी कार बनाई है। इस नवाचार की खास बात यह है कि इसमें प्रयुक्त इंजन और कलपुर्जे पूरी तरह एक कबाड़ बाइक से लिए गए हैं, जबकि इसकी चेसिस छात्रों ने स्वयं डिजाइन और निर्मित की है। करीब डेढ़ माह की मेहनत से इस परियोजना को पूरा किया गया।

इसमें मेकेनिक इलेक्ट्रिक व्हीकल ट्रेड के छात्र शुभम और आदित्य शर्मा ने टीम के साथ कार का निर्माण किया है। इस उपलब्धि में संस्थान के प्रधानाचार्य इंजीनियर मनीष कुमार राणा, समूह अनुदेशक और अन्य प्रशिक्षकों का भी मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त हुआ। प्रधानाचार्य मनीष कुमार राणा ने बताया कि हिमाचल प्रदेश में यह अपनी तरह का पहला प्रयास है, जिसमें सीमित संसाधनों के बावजूद इस संस्थान स्तर पर छात्रों ने एक कार्यशील चौपहिया वाहन का निर्माण किया है। उन्होंने इस अभिनव उपलब्धि के लिए छात्रों को शुभकामनाएं दीं और पूरे स्टाफ का सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।◆◆◆

शिंकुला में बन रही विश्व की सबसे ऊंची सुरंग

भारतीय सेना का अब लद्दाख बॉर्डर तक पहुंचना और भी आसान हो जाएगा। सीमा सडक़ संगठन एक और ऐतिहासिक उपलब्धि की ओर बढ़ रहा है। दुर्गम क्षेत्र जांस्कर रेंज में स्थित 16,080 फुट ऊंचे शिंकुला दर्रा के नीचे बीआरओ समुद्र तल से 15,840 फुट की ऊंचाई पर दुनिया की सबसे ऊंची डबल टनलिंग सुरंग का निर्माण कर रहा है।

यह परियोजना वर्ष 2028 तक पूरी होने की संभावना है। टनल से चीन अधिकृत तिब्बत और पाकिस्तान से सटे लद्दाख की सीमा की सुरक्षा और भी मजबूत होगी। यह टनल 4.1 किलोमीटर लंबी और 10.5 मीटर चौड़ी होगी। दोनों टनलों में अब तक करीब 30-30 मीटर खुदाई की जा चुकी है। इसके साथ ही तीन पुलों और दो किलोमीटर सडक़ का भी निर्माण किया जा रहा है।

सामरिक मजबूती और पर्यटन को मिलेगा बल

टनल के निर्माण से पाकिस्तान और चीन की सीमाओं से सटे लद्दाख बॉर्डर पर पहुंचना सुगम हो जाएगा। यह टनल जांस्कर और कारगिल जैसे क्षेत्रों में पर्यटन को नई उड़ान देगी। साल भर यातायात चालू रहने से क्षेत्र में आर्थिक और सामाजिक विकास भी तेज होगा। शिंकुला टनल न केवल इंजीनियरिंग का चमत्कार साबित होगी, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, पर्यटन, और स्थानीय विकास का भी सशक्त माध्यम बनेगी। सीमा सड़क संगठन की यह पहल आने वाले समय में भारत की रणनीतिक स्थिति को और भी सुदृढ़ बनाएगी।◆◆◆

अंतरराष्ट्रीय एग्री-हॉर्टी-ऑर्गेनिक एक्सपो में चमका हिमाचल

राज्य को मिला प्रथम स्थान

डा. समीर, डा. दलीप और डा. कुशाल की मेहनत लाई रंग

दिल्ली में आयोजित अंतरराष्ट्रीय एग्री-हॉर्टी-ऑर्गेनिक एक्सपो में हिमाचल प्रदेश के स्टॉल को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार भारत सरकार के माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री भागीरथ चौधरी जी द्वारा प्रदान किया गया। यह उपलब्धि हिमाचल प्रदेश उद्यान विभाग की प्रतिबद्धता, नवाचार और समर्पित टीम भावना का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस सम्मानजनक उपलब्धि के पीछे विभाग के तीन अधिकारियों डा. समीर सिंह राणा (विषय विशेषज्ञ, उद्यान एमआईडीएच), डा. दलीप सिंह नरगेटा (विषय विशेषज्ञ, मधुमक्खी पालन नॉर्थ ज़ोन) तथा डा. कुशाल सिंह मैहता (विषय विशेषज्ञ, उद्यान शिमला) की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इन्होंने प्रदेश की प्राकृतिक विविधता, जैविक उत्पादों और कृषि नवाचारों को राष्ट्रीय मंच पर आकर्षक व प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया, जिससे आगंतुकों और विशेषज्ञों का विशेष ध्यान आकर्षित हुआ। प्रदर्शनी में हिमाचल प्रदेश के बागवानों द्वारा उगाए गए उच्च गुणवत्ता वाले फलों जैसे फ्यूजी, गाला, ग्रैनी स्मिथ और रेड डिलीशियस सेब, कारमीन, रेड बार्टलेट और केनाल रेड नाशपाती, ब्लू बेरी, ब्लैक एम्बर प्लम, चेरी और कीवी को प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया। साथ ही लिलियम, कारनेशन, जिपसोफिला, सूरजमुखी, ग्लैडिओलस और चमेली जैसे फूलों तथा रेड वाइन, एप्पल साइडर टी, जैम, चटनी, बुरांश स्क्वैश और शहद जैसे प्रोसेसिंग उत्पादों ने भी दर्शकों को खूब आकर्षित किया। यह सभी उत्पाद हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों के किसानों द्वारा जैविक व प्राकृतिक खेती विधियों से तैयार किए गए थे, जो पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक कृषि तकनीकों का समन्वय दर्शाते हैं। इस उत्कृष्ट प्रदर्शन को संभव बनाने में उद्यान विभाग हिमाचल प्रदेश के निदेशक श्री विनय सिंह (आईएएस) का कुशल मार्गदर्शन और नेतृत्व अत्यंत सराहनीय रहा। उनके निर्देशन में पूरी टीम ने उत्कृष्टता की दिशा में कार्य किया और हिमाचल प्रदेश को राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया। हिमाचल को प्राप्त यह पुरस्कार न केवल प्रदेश की जैव विविधता और किसानों की मेहनत की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान है, बल्कि यह उद्यान विभाग की कार्यक्षमता और दूरदर्शिता का भी प्रमाण है। विभाग इस सफलता को सभी बागवानों, अधिकारियों, तकनीकी कर्मचारियों व सहभागी संस्थाओं को समर्पित करता है।◆◆◆

पौधों को जीवाणुओं से बचाएगा अरंडी की पत्ती का अर्क

गोरखपुर यूनिवर्सिटी की सहायक आचार्य को मिली सफलता

गोरखपुर के दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय की वनस्पति विज्ञान विभाग की सहायक आचार्य डॉ. स्मृति मल्ल ने अरंडी की पत्ती से एक ऐसा कीटनाशक विकसित किया है जो फाइटोप्लाज्मा और कीड़ों से पौधों की रक्षा करेगा। यह कीटनाशक पर्यावरण अनुकूल और सस्ता होगा। इस शोध के लिए पेटेंट मिलने के बाद अब वह इसे किसानों तक पहुंचाने के लिए कंपनियों से संपर्क करेंगी।◆◆◆

भक्ति, श्रद्धा, प्रेम का पर्व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

चेतन कौशल 'नूरपुरी'

भगवान श्रीकृष्ण लगभग 5000 वर्ष ईश्वी पूर्व इस धरती पर अवतरित हुए थे। उनका जन्म द्वापर युग में हुआ था। द्वापर युग, हिंदू धर्म के चार युगों में से दूसरा युग है। यह युग सत्ययुग के बाद और कलयुग से पहले आता है। द्वापर युग को धर्म, सत्य और सदाचार का युग माना जाता है। द्वापर युग में ही महाभारत का युद्ध हुआ था, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को श्रीमद्भागवत गीता का ज्ञान दिया था। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में कंस की कारागार में हुआ था। कंस जो देवकी का भाई और मथुरा का राजा था, को भविष्यवाणी हुई थी कि देवकी की आठवीं संतान उसका वध करेगी। सुनकर कंस ने देवकी और वासुदेव को कारागार में डाल दिया था। कालचक्र घुमने के साथ-साथ जब भी उनके यहाँ कोई बच्चा पैदा होता तब कंस स्वयं आकर उसे मार देता था। इस प्रकार उसने एक-एक करके उनके सात सभी बच्चों को जन्म लेने के पश्चात तुरंत मार डाला था। भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि की आधी रात को मथुरा की कारागार में देवकी और वासुदेव की आठवीं संतान के रूप में भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था द्य वे भगवान विष्णु के आठवें अवतार माने जाते हैं। उस समय भयंकर वर्षा और गगन में मेघों की भारी गरजना हो रही थी। श्रीकृष्ण के जन्म के समय, कारागार के सभी पहरेदार सो गए थे और भगवान विष्णु की अपार कृपा से, वासुदेव कृष्ण को गोकुल में नंद और यशोदा के पास पहुँचाने में सफल रहे।

> "यह पर्व समाज को सत्य, धर्म और भक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। श्रीकृष्ण के आदर्श जीवन से हमें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष, संयम और आध्यात्मिक जागरूकता का संदेश प्राप्त होता है।"

कृष्ण का जन्म भाद्रपद मास में कृष्ण पक्ष में अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र के दिन रात्री के 12 बजे हुआ था । कृष्ण जन्माष्टमी, भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव, भारत में बहुत धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया जाता है। भक्त उपवास रखते हैं, मंदिरों में जाते हैं, भजन गाते हैं, और भगवान कृष्ण की लीलाओं का भी पाठ करते हैं।

जन्माष्टमी का व्रत भगवान कृष्ण के जन्मदिन के उपलक्ष्य में रखा जाता है। यह व्रत भगवान कृष्ण के प्रति श्रद्धा और भक्ति व्यक्त करने की एक युक्ति है। इस दिन व्रत रखने से भगवान कृष्ण की कृपा प्राप्त होती है, और माना जाता है कि इससे सुख, शांति और समृद्धि मिलती है। जन्माष्टमी का व्रत आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है। जन्माष्टमी का व्रत पूरे दिन रखा जाता है और रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद ही व्रत खोला जाता है। इस दिन लोग उपवास रखते हैं, भजन-कीर्तन और भगवान कृष्ण की पूजा-अर्चना करते हैं। जन्माष्टमी व्रत के दिन ब्रह्मचर्य का पालन करना, जन्माष्टमी के व्रत में अन्न ग्रहण नहीं करना, व्रत को रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद या अगले दिन सूर्योदय के बाद खोलना, जन्माष्टमी के दिन भगवान कृष्ण के मंदिर जाना। सुबह और रात में विधि-विधान से भगवान कृष्ण की पूजा करना, भगवान को अर्पित किए गए प्रसाद को ही ग्रहण करके व्रत खोलना, व्रत के दौरान दिन में नहीं सोना,किसी को अपशब्द नहीं कहना आदि नियमों का पालन किया जाता है। सुबह जल्दी उठकर स्नान करके व्रत का संकल्प करना। घर के मंदिर को साफ करना और लड्डू गोपाल को स्नान कराना । लड्डू गोपाल को सुंदर वस्त्र, मुकुट, माला पहनाना और चंदन का तिलक लगाना । लड्डू गोपाल को झूले में बैठाना और उन्हें झूला झुलाना । भगवान को फल, मिठाई, पंचामृत, पंजीरी आदि का भोग लगाना । रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद विधि-विधान से पूजा करना। भगवान की आरती करना और प्रसाद चढ़ाना । भगवान को अर्पित किए गए प्रसाद को ग्रहण करके व्रत खोलना । पूरे दिन राधा-कृष्ण के नाम का जप करना। भगवान कृष्ण का अधिक से अधिक ध्यान करना। किसी से झगड़ा नहीं करना और क्रोध से बचना। इन नियमों का पालन करके जन्माष्टमी का व्रत रखने से भक्तों को भगवान कृष्ण की अपार कृपा प्राप्त हो सकती है।◆◆◆

श्रावणी पर्व रक्षाबंधन इतिहास एवं परंपरा

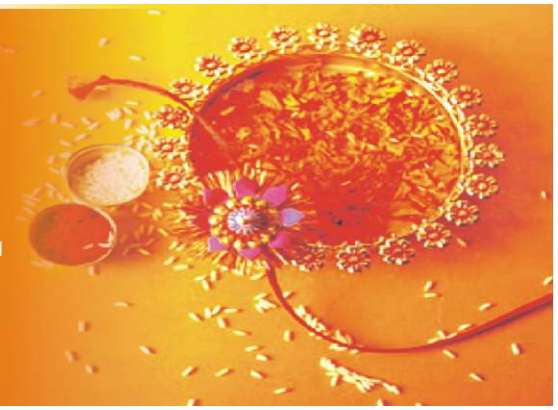

डॉ. कर्म सिंह

भारतीय परंपरा में मिले पर्व त्यौहार मनाने का आध्यात्मिक धार्मिक सामाजिक महत्व रहता है। नव संवत्सर, दीपावली,दशहरा, संक्रांति आदि विभिन्न त्योहारों के साथ-साथ श्रावणी पर्व का भी विशेष महत्व है। श्रावणी पर्व वेदों के स्वाध्याय, चिंतन मनन का पर्व है, जिसका अपना एक इतिहास एवं समृद्ध परंपरा है जो वर्तमान में रक्षाबंधन के पावन त्यौहार के रूप में प्रचलित है। वस्तुत वैदिक सनातन धर्म एवं संस्कृति में मेले पर्व त्योहारों का सामाजिक धार्मिक और सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से विशिष्ट महत्व है। हर पर्व त्यौहार का किसी न किसी भूमंडलीय संरचना , प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक घटना से संबंध रहता है। अनेक पर्व त्यौहार सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं से बंधे हुए रहते हैं, जो जनजीवन में भले ही रूढ़िवादी मालूम पड़ते हों परंतु उनके पीछे वैज्ञानिक, व्यावहारिक और विशिष्ट सामाजिक परंपराओं एवं चिंतन का भी जुड़ाव रहता है। इसी परंपरा में श्रावणी उपाकर्म एवं रक्षाबंधन भी महत्वपूर्ण पर्व है, जो कि आध्यात्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, पारिवारिक और विश्व बंधुत्व तथा पर्यावरण की भावना से ओतप्रोत है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार जब वनस्पतियां उत्पन्न होती हैं, तब श्रावण मास के श्रवण व चंद्र के मिलन (पूर्णिमा) या हस्त नक्षत्र में श्रावण पंचमी को उपाकर्म होता है। यह क्रम माघ शुक्ल प्रतिपदा या पौष पूर्णिमा तक चलता था। इस तरह श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के शुभ दिन रक्षाबंधन के साथ ही श्रावणी उपाकर्म का पवित्र संयोग बनता है।

प्राचीन परंपरा में श्रावणी के पावन दिवस पर ही गुरु द्वारा शिष्यों का यज्ञोपवीत संस्कार करके वेदारंभ अर्थात् वेद आदि सत्य शास्त्रों पर आधारित शिक्षाओं का ज्ञान प्राप्त कराने का शुभारंभ किया जाता था । श्रावणी पर नवागंतुक विद्यार्थियों के यज्ञोपवीत संस्कार तथा वेद एवं वैदिक साहित्य के पठन-पाठन तथा समग्रता से शास्त्र एवं शस्त्र की शिक्षा प्रदान किए जाने का क्रम प्रारंभ होने की भी परंपरा रही है। इसी दिन वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण अपने यजमानों को रक्षा सूत्र बांधकर वेदज्ञान तथा वैदिक धर्म एवं संस्कृति की परंपराओं का संरक्षण करने के लिए वचनबद्ध किया करते थे। इस प्रकार यह परंपरा वेद आदि सत्य शास्त्रों, सनातन धर्म एवं संस्कृति के पठन पाठन, स्वाध्याय, चिंतन, मनन का पर्व है। भारतीय परंपरा में प्रत्येक परिवार ऋषियों के कुल, गोत्र और वेद तथा शाखाओं से संबंधित है। इसीलिए आज भी विवाह आदि संस्कारों में गोत्र एवं शाखा का उच्चारण करने की परंपरा है। वेद निरंतर स्वाध्याय एवं

Dr. Hem Raj Sharma
ANO- Rectal Surgeon (Kshar Sutra)
(Piles, Fistula, Fissure, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Chikitsak Guru RAV
National Academy of Ayrveda New Dehli under Ministry of Ayush,Govt of India
Formerly Incharge Medical Officer DAH Una, Govt of Himachal Pradesh
Director
JAGAT HOSPITAL & KSHAR SUTER CENTER
Near Govt College Una HP
Mob.: 94184-88660, 88940-68358, 94593-88323
Email: drhemrajsharma55@gmail.com

चिंतन मनन का विषय है अत: स्वाध्याय को सर्वोपरि मानते हुए ऋषियों ने उपदेश किया –'स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्' अर्थात् अपने जीवन में कभी भी स्वाध्याय और प्रवचन से प्रमाद नहीं करना। गुरु के मुख से उपदेश सुनने की श्रुति का इस पर्व का नाम श्रावणी होने के कारण यह शब्द, श्रुति परंपरा एवं श्रवण। श्रुति से श्रवण, और श्रावणी पर्व अस्तित्व में आए हैं। श्रुति वेद को कहते हैं । श्रावणी पर्व वेदों के उपदेश को सुनने सुनने चिंतन मनन का पर्व है। श्रावणी पर्व को ऋषिपूजन, सूर्योपस्थान तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करते हैं। यज्ञ के बाद वेद-वेदांग का अध्ययन आरंभ होता है। इस सत्र का अवकाश समापन से होता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर बड़े-बड़े यज्ञ किये जाते हैं जिससे वायुमण्डल सुगन्धित होकर स्वास्थ्य की दृष्टि से हितकर होता है। इस प्रकार श्रावणी पर्व स्वाध्याय के साथ-साथ पर्यावरण चेतना का भी पर्व है। वेद में भी उपदेश किया गया है–' निकामेनिकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न: ओषधय: पच्यन्तां योमक्षेमो न: कल्पताम्।' समय पर वृष्टि हो, अनावृष्टि न हो, औषधियां वनस्पतियां कल्याण करने वाली हों। सारी वनस्पितियां फलों व अमोघ औषधियों से लदी हों। समस्त मनुष्यों मनुष्यों, पशु पक्षियों एवं समस्त प्राणियों का कल्याण हो।

> **"श्रावणी पर्व न केवल वैदिक स्वाध्याय, पर्यावरण चेतना और आध्यात्मिक उन्नयन का पर्व है, बल्कि यह भाई-बहन के पवित्र संबंध और पारिवारिक मूल्यों की रक्षा हेतु एक सशक्त सांस्कृतिक प्रतीक भी बन गया है।"**

श्रावणी धार्मिक स्वाध्याय के प्रचार का पर्व है। सद्ज्ञान, बुद्धि, विवेक और धर्म की वृद्धि के लिए इसे निर्मित किया गया, इसलिए इसे ब्रह्मपर्व भी कहते हैं। प्राचीन काल में ऋषि-मुनि इसी दिन से वेद पारायण आरंभ करते थे। इसे 'उपाकर्म' कहा जाता था।

कालांतर में श्रावणी पर्व के साथ कई ऐतिहासिक और सामाजिक घटनाएं भी जुड़ती चली गई और इसे भाई बहन के अटूट प्रेम के संबंध में भी मनाया जाने लगा, जब बहनें भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधकर उनसे अपनी रक्षा का वचन लेती हैं। यह एक पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा के निर्वहन की का भी पर्व है। जो भाई-बहन के पवित्र स्नेह के माध्यम से महिलाओं के दोनों कुलों में सम्मान और प्रतिष्ठा को कायम करने की एक अटूट कड़ी भी है।

कुछ समय से रक्षा बंधन का पर्व भाई-बहन के स्नेह के पर्व के रूप में प्रसिद्ध हो गया। भाई अपनी बहनों से राखी बंधवा कर उसे यह विश्वास दिलाते हैं कि इस पवित्र बंधन के माध्यम से वह तुम्हारी सदैव देखभाल करता रहेगा। चाहे कोई भी परिस्थिति, कैसी भी समस्या आ जाए, उसका भाई हमेशा उसकी रक्षा करेगा। इसी दिन रक्षासूत्रों को ऋषि, मुनि, ब्राह्मण वेदमंत्रो से अभिमंत्रित करते थे। तप और त्याग की शक्ति का मिलन एवं वेदमंत्रों के साथ योग-संयोग अति प्रभावशाली होता है। इस क्रम में आचार्य, कुलगुर एवं पुरोहित अपने यजमानों को रक्षासूत्र बाँधते हैं।

श्रावणी और रक्षाबन्धन की स्मृति को प्रगाढ़ करने के लिए पौधरोपण का भी प्रावधान है। शास्त्रोक्त मान्यता है कि अनुकूल मौसम में पौधरोपण करने पर अनंत गुणा पुण्य लाभ होता है। अत: श्रावणी पर्व से अपने जीवन को सत्पथ पर बढ़ाने, रक्षासूत्र द्वारा नारी के प्रति पवित्रता का भाव रखने तथा पौधरोपण द्वारा इन भावनाओं को क्रियाओं का संकल्प लिया जाता है। वस्तुत एक महिला बेटी, बहन, मां, दादी, नानी, आदि विभिन्न रूपों में अपने मातृत्व एवं वात्सल्य से परिवार एवं समाज को पवित्र बंधनों में बांधे रखती है। इसलिए वेद में महिला को महारानी कहा गया है। वह कृपा की मोहताज नहीं !सम्मान पाने का अधिकार रखती है। इसलिए वर्तमान में महिलाओं को एक बहन, माता, बेटी के रूप में अपना कर्तव्य निस्वार्थ भाव से अपना कर्तव्य निभाने का प्रयास करना चाहिए और प्रिय बहनों से अपनी कलाई पर राखी बंधवाने वाले भाइयों का भी कर्तव्य है कि वे बहन के पारिवारिक, सामाजिक संरक्षण के लिए सदैव तत्पर रहें। तभी यह समाज इस पवित्र बंधन को और भी मजबूत बनाए रख सकेगा।

वर्तमान में रक्षाबंधन तथा अन्य भारतीय पारंपरिक त्यौहारों पर बाजारवाद हावी होने लगा है। क्योंकि मूलरूप से भारतीय त्यौहार अपने इतिहास और परंपराओं को समेटे हुए हैं अत: उन्हें पारंपरिक तौर पर ही मनाया भी जाना चाहिए। इस प्रकार श्रावणी पर्व वेद वैदिक साहित्य के स्वाध्याय चिंतन और मनन और भाई बहन के अटूट स्नेह का प्रतीक है। अत: इन परंपराओं को बनाए रखना इस समय की सबसे बड़ी चुनौती है ताकि हमारे मेले पर्व त्यौहार अपनी मूल विरासत एवं परंपरा के साथ जुड़े रह सकें।◆◆◆

हिमाचल में बादल फटने की स्थिति गम्भीर

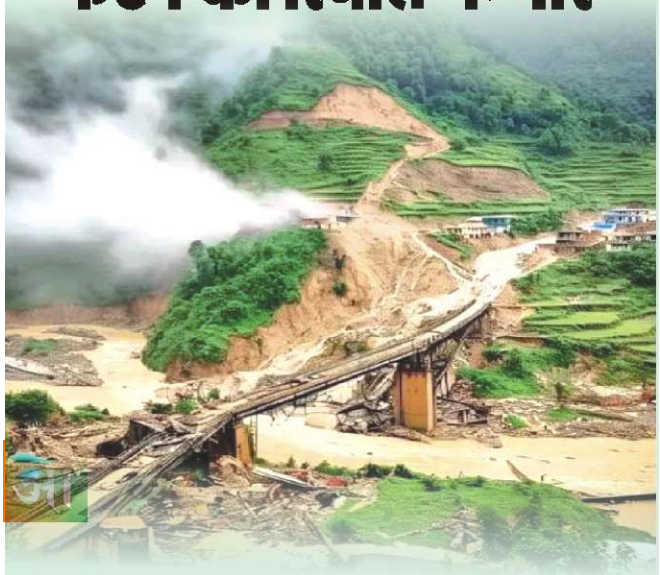

के के ठाकुर - औट

हिमाचल प्रदेश में बादल फटने की घटनाएं हर साल मानसून के दौरान होती हैं, लेकिन हाल के वर्षों में इनमें तेजी से वृद्धि देखी गई है। एक रिसर्च के अनुसार, पिछले 10 सालों में बादल फटने की घटनाओं में 121 फीसदी का इजाफा हुआ है।

आज की तारीख में, हिमाचल प्रदेश में बादल फटने की स्थिति गम्भीर है, खासकर मंडी और कुल्लू जिले में। 20 जून से अब तक राज्य में 20 से अधिक बादल फटने की घटनाएं दर्ज की गई हैं, जिनमें सबसे ज्यादा प्रभावित मंडी जिला है। मंडी में 1 जुलाई को भारी बारिश और बादल फटने से बड़े पैमाने पर तबाही मची, जिससे 4 लोगों की मौत हुई और 16 लोग लापता हो गए थे, 2 जुलाई को भी 10 और घटनाएं सामने आईं और बारिश व भूस्खलन से संबंधित घटनाओं में मरने वालों की संख्या 50 से अधिक हो गई, जबकि 25 से अधिक लोग लापता हो गए थे। प्रदेश में मॉनसून से अब तक 100 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है और 50 से अधिक अभी भी लापता बताए जा रहे हैं।

बादल फटने की दर की बात करें तो, 20 जून से लेकर अब तक राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र की रिपोर्ट के अनुसार, हिमाचल में 18 बादल फटने और 3 फ्लैश फ्लड की घटनाएं दर्ज की गई हैं, जिनमें से अधिकांश मंडी जिले में केंद्रित थीं। मंडी जिले में अकेले 1 जुलाई को 10 बादल फटने की घटनाएं हुई थीं, जिससे भारी नुकसान हुआ। बादल फटने का मुख्य कारण भारी मात्रा में नमी वाले बादलों का किसी बाधा से टकराकर अचानक बहुत तेजी से संघनित होना है। ये बाधाएं अक्सर पहाड़ होते हैं, जहां गर्म और नम हवा ऊपर उठकर ठंडी होती है और बादलों में बहुत अधिक पानी जमा हो जाता है। जब ये बादल इस भारी मात्रा में पानी को एक साथ छोड़ते हैं, तो उसे बादल फटना कहते हैं. इसके अलावा, गर्म और ठंडी हवा के आपस में टकराने से भी बादल फट सकते हैं। भूस्खलन के लिए ढलानों की स्थिरता की निगरानी के लिए सेंसर जैसे इनक्लिनोमीटर, एक्सटेंसोमीटर स्थापित किए जाएं जो मिट्टी के विस्थापन या हलचल का पता लगा सकें। ढलानों को स्थिर करने के लिए इंजीनियरिंग उपाय किए जाएं, जैसे रिटेनिंग वॉल का निर्माण, ढलान को समतल करना, टेरेसिंग (सीढ़ीदार खेती) और उपयुक्त वनस्पति का रोपण जो मिट्टी के कटाव को रोके। जल निकासी प्रणालियों में सुधार किया जाए ताकि पानी ढलानों पर जमा न हो। नदियों के किनारे और जल निकायों के आसपास के क्षेत्रों में उचित तटबंध और जल निकासी व्यवस्था सुनिश्चित की जाए ताकि अचानक बाढ़ के जोखिम को कम किया जा सके।

- उच्च-जोखिम वाले क्षेत्रों में अनियंत्रित निर्माण पर सख्त प्रतिबंध लगाए जाएं। ऐसे क्षेत्रों में निर्माण के लिए कड़े भवन कोड और दिशानिर्देश लागू किए जाएं।
- वनों की कटाई को रोका जाए और वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जाए, खासकर पहाड़ी और संवेदनशील क्षेत्रों में।
- स्थानीय समुदायों को आपदा जोखिमों, पूर्व चेतावनी संकेतों और निकासी प्रक्रियाओं के बारे में शिक्षित किया जाए। नियमित मॉक ड्रिल और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं ताकि लोग आपदा की स्थिति में सही प्रतिक्रिया दे सकें।
- एक व्यापक आपदा प्रतिक्रिया योजना विकसित की जाए जिसमें खोज और बचाव अभियान, चिकित्सा सहायता, राहत

शिविरों की स्थापना और आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के लिए स्पष्ट प्रोटोकॉल हों। आपदा प्रबंधन के लिए पर्याप्त वित्तीय और मानव संसाधनों का आवंटन किया जाए। प्रशिक्षित आपदा प्रतिक्रिया टीमों, उपकरणों और आवश्यक सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

आपदा की स्थिति में सुचारू संचार सुनिश्चित करने के लिए मजबूत और विश्वसनीय संचार नेटवर्क रेडियो, सैटेलाइट फोन स्थापित किए जाएं। स्थानीय प्रशासन, आपदा प्रबंधन एजेंसियों और प्रभावित समुदायों के बीच त्वरित सूचना के आदान-प्रदान की व्यवस्था हो।

संभावित प्रभावित क्षेत्रों से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए विस्तृत निकासी मार्ग और सुरक्षित आश्रयों की पहचान की जाए। विभिन्न सरकारी विभागों (मौसम विभाग, भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, लोक निर्माण विभाग), गैर-सरकारी संगठनों और स्थानीय समुदायों के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित किया जाए।इन कदमों को उठाकर प्रशासन बादल फटने और भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम कर सकता है और समुदायों को अधिक सुरक्षित बना सकता है।◆◆◆

“हिमाचल प्रदेश में बादल फटने और भूस्खलन की बढ़ती घटनाएं गंभीर चिंता का विषय हैं। इनके प्रभाव को कम करने के लिए वैज्ञानिक योजना, सतत विकास, मजबूत आपदा प्रबंधन और समुदाय की जागरूकता आवश्यक है। बहुआयामी रणनीति अपनाकर ही जान-माल की हानि को प्रभावी रूप से रोका जा सकता है।”

...न वो गरज थी बारिश की

न वो गरज थी बारिश की, न वो बहाव किसी नदी का था
यह तो प्रकृति का रूठा रूप था,
जो हिमालय की शांत छाया को भी हिला गया।
सराज, करसोग और नाचन
तीनों घाटियाँ चीत्कार कर उठीं।
कभी जीवन से भरी बस्तियाँ थीं जहाँ,
आज वहाँ बस मलबा है... मौन है... और आँसू हैं।
जहाँ बचपन गलियों में खेलता था,
जहाँ दीवारों पर माँ की परछाईं चलती थी,
वहाँ अब न घर है, न ज़मीन,
सिर्फ धँसी हुई उम्मीदें और बहते आँसू हैं।
घर ईंटों और सीमेंट से नहीं,
स्मृतियों, रिश्तों और भावनाओं से बनते हैं।
वो दहलीज़ जो वर्षों से पूजा जाती थी,
वो चूल्हा जो हर सुबह गुनगुनाता था
सब कुछ बह गया, जैसे किसी ने पूरी ज़िंदगी को धो डाला हो।
रूद्र रूप में टूटे बादल,हर नाला नाग बनकर गरजा।
पेड़ उखड़ गए, धरती फट गई,
और इंसानी जीवन एक चुप्पी में सिमट गया।
कोई माँ पुकारे—बेटा कहाँ है?
कोई बच्चा पूछे—दादी का आँचल कहाँ है?
जो बच गए हैं, वे भी खो गए हैं,
ज़िंदा हैं मगर जैसे सो गए हैं।
हर आँख में आँसू, हर दिल में घाव है,
कल जहाँ घर था, आज वहाँ बस बहाव है।
टूटे नहीं सिर्फ पत्थर और लकड़ियाँ,
बिखर गए हैं रिश्तों के पावन धागे।
हे प्रकृति, तू पालनहार थी — अब न्याय कर,
इतना तो कर, फिर कभी न यह हो।
जिनकी छत उजड़ी है, उन्हें आसरा दे,
और इस मौन पीड़ा को फिर संबल स्वर दे।

– रमा ठाकुर

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चमके पांवटा के लक्ष्य

थाईलैंड में वेटलिफ्टिंग में जीता गोल्ड मेडल

उपमंडल के युवा खिलाड़ी लक्ष्य वालिया ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत और हिमाचल प्रदेश का नाम रोशन किया है। थाईलैंड में आयोजित ओपन कैटेगरी वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में लक्ष्य ने स्वर्ण पदक जीतकर देश का मान बढ़ाया। लक्ष्य महज 21 वर्ष के हैं और उनका वजन 116 किलोग्राम है। खास बात यह है कि वह इस प्रतियोगिता में हिमाचल प्रदेश के एकमात्र प्रतिनिधि थे। आइस स्केटिंग में हिमाचल ने चार स्वर्ण, दो-दो रजत और कांस्य पदक जीते उत्तराखंड के देहरादून में आयोजित राष्ट्र स्तरीय 20वीं आइस स्केटिंग प्रतियोगिता में हिमाचल की टीम ने चार स्वर्ण, दो रजत और दो कांस्य पदक जीत कर प्रदेश का नाम रोशन किया है। हिमाचल के खिलाड़ियों ने सुविधाओं के अभाव के चलते इस कारनामे को अंजाम दिया।

मोनिका और शशि ने भी चमकाया नाम

मोनिका

अमेरिका में हुई वर्ल्ड पुलिस बॉक्सिंग चैंपियनशिप में हिमाचल की बेटियों ने भी देश के लिए सम्मान हासिल किया। शिमला के रामपुर की रहने वाली मोनिका ने अपने वर्ग में गोल्ड मेडल जीता। किन्नौर की शशि ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए सिल्वर मेडल पर कब्जा किया।

शशि

हिमाचल के अविनाश जम्वाल

ने विश्व मुक्केबाजी कप में देश को दिलाया रजत

हिमाचल प्रदेश के अविनाश जम्वाल ने विश्व मुक्केबाजी कप में शानदार प्रदर्शन करते हुए सिल्वर मेडल जीता है। इससे पहले उन्होंने ब्राजील में भी इसी प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल किया था। अब कजाकिस्तान के अस्ताना में भी ताकत का लोहा मनवाया। कजाकिस्तान के अस्ताना में 30 जून से 7 जुलाई तक विश्व मुक्केबाजी कप हुआ। विभिन्न मुकाबलों में अविनाश ने पूर्व ओलंपियन और मेजबान खिलाड़ियों को मात दी। फाइनल मुकाबले में अविनाश का सामना ब्राजील के यूरी फाल्काओ से हुआ।

दोनों खिलाड़ियों ने शानदार खेल और ताकत का प्रदर्शन किया। मुकाबला रोमांचक मोड़ तक पहुंचा। आखिरकार 2-3 के करीबी बाउट में अविनाश को रजत पदक से संतोष करना पड़ा। हालांकि इससे पहले अविनाश ने प्री-क्वार्टर फाइनल में अजरबैजान के पूर्व ओलंपियन मलिक हसनओव को हराया। हिमाचल प्रदेश बॉक्सिंग संघ के महासचिव एसके शांडिल ने कहा कि लगातार दूसरी बार विश्व स्तर पर सिल्वर मेडल जीतकर यह साबित कर दिया है कि वह अंतर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी में भारत की मजबूत उम्मीद बन चुके हैं।◆◆◆

एनसीईआरटी ने बदला पाठ्यक्रम

अब अकबर महान नहीं, सिर्फ अकबर सच पढ़ेगा हिन्दूस्तान

एनसीईआरटी (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद) द्वारा इतिहास की किताबों में किए गए बदलावों को लेकर नया विचार खड़ा हो गया है। कक्षा 7वीं की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में मुगल सम्राट अकबर का उल्लेख अब 'अकबर महान' की बजाय केवल 'अकबर' के रूप में किया गया है। इस बदलाव को लेकर शिक्षाविदों और इतिहासकारों के बीच तीखी बहस छिड़ गई है। कुछ का मानना है कि यह बदलाव इतिहास को एक नया दृष्टिकोण देने की कोशिश है, जबकि अन्य इसे इतिहास के साथ छेड़छाड़ मान रहे हैं।

एनसीईआरटी अधिकारियों का कहना है कि यह बदलाव पाठ्यक्रम को सरल, तथ्यों पर आधारित और ज्यादा समकालीन बनाने की दिशा में उठाया गया कदम है। 'हमने कई अध्यायों को संक्षिप्त किया है, शब्दों की पुनर्रचना की है और अनावश्यक विशेषणों को हटाया है। यह किसी विशेष शासक के महत्व को कम करने का प्रयास नहीं है,' एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा। हालांकि, विपक्षी दलों और कई इतिहासकारों ने सरकार पर इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश करने का आरोप लगाया है। सोशल मीडिया पर भी "#AkbarTheGreat" ट्रेंड करने लगा है, जहाँ लोग इस बदलाव पर नाराज़गी जाहिर कर रहे हैं। यह पहली बार नहीं है जब एनसीईआरटी की किताबों में ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर बदलाव हुआ हो। पिछले कुछ वर्षों में मुग़ल शासन, आज़ादी की लड़ाई और अन्य संवेदनशील विषयों पर कई बार पाठ्यक्रम संशोधन को लेकर विवाद उठ चुके हैं। अब देखने वाली बात यह होगी कि क्या यह बदलाव छात्रों की समझ को नया दृष्टिकोण देगा या फिर ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर भ्रम की स्थिति उत्पन्न करेगा।

अंतरिक्ष से शुभांशु का शुभ आगमन

संकल्प से सिद्धि तक

गुरुकुल संस्कारों में पले-बढ़े लखनऊ के शुभांशु शुक्ला ने वह कर दिखाया जो कभी केवल कल्पनाओं में होता था। भारतीय वायुसेना में ग्रुप कैप्टन के रूप में सेवाएं देते हुए उन्होंने लगभग 2000 घंटे की उड़ान पूरी की। परंतु उनका सपना केवल आकाश तक सीमित नहीं था —उन्हें अंतरिक्ष की ऊँचाइयों को छूना था। कारगिल युद्ध (1999) के समय उन्होंने ठाना था कि वे देश के लिए कुछ ऐसा करेंगे जो आने वाली पीढ़ियों के लिए मिसाल बन जाए। शुभांशु की प्रेरणा का स्त्रोत उनका परिवार था, विशेष रूप से उनकी बहन और माता-पिता, जिन्होंने शिक्षक की भूमिका निभाते हुए उन्हें अनुशासन और समर्पण सिखाया। NDA के माध्यम से उनका चयन भारतीय वायुसेना में हुआ और वहीं से उनकी उड़ान ने असली रफ्तार पकड़ी। 2019 में ISRO के गगनयान मिशन के लिए चयन के बाद उन्होंने रूस के यूरी गागरिन ट्रेनिंग सेंटर में कठोर प्रशिक्षण लिया, फिर बेंगलुरु और ह्यूस्टन में उन्नत प्रशिक्षण प्राप्त किया। 25 जून 2025 को उन्होंने Axiom-4 मिशन से अंतरिक्ष की यात्रा की और अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर 18 दिन तक सात महत्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रयोग किए, जिनमें मेथी, मूंग, टार्डिग्रेड्स और मानव मांसपेशियों पर सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव से संबंधित प्रयोग शामिल थे। इस मिशन ने न केवल गगनयान-2027 की वैज्ञानिक नींव रखी, बल्कि भारत को अंतरिक्ष विज्ञान की नई ऊँचाई दी। ISRO ने उनके मिशन पर 550 करोड़ का निवेश किया, परंतु शुभांशु ने इस मिशन के लिए कोई वेतन नहीं लिया। उनका उद्देश्य केवल अनुभव, शोध और भारत के अंतरिक्ष भविष्य को मजबूत करना था। उनका यह 'शुभ आगमन' भारत की युवा पीढ़ी के लिए एक संदेश है—सपने देखो, मेहनत करो और असंभव को संभव बनाओ। यही सच्चा राष्ट्रनिर्माण है।◆◆◆

मेघों का बरसना पहाड़ों का दरकना

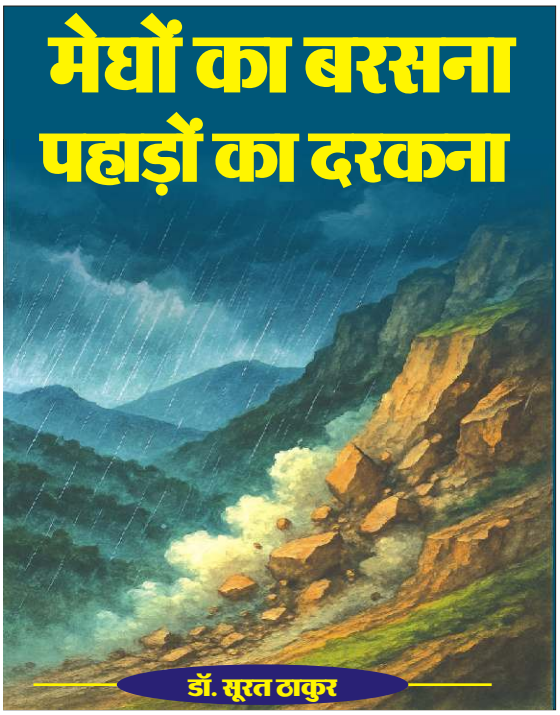

डॉ. सूरत ठाकुर

पिछले तीन वर्षों से हिमाचल प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर बरसात आने पर मेघों ने अपना रौद्र रूप दिखाना आरम्भ कर दिया है। घाटियों में जगह -जगह बादलों के फटने का सिलसिला जारी है। इसमें सबसे अधिक कुल्लू, मंडी, शिमला और किन्नौर जिले प्रभावित हुए हैं।

सुबह आसमान साफ होता है, दोपहर ढलते न जाने कहां से काले बादलों का एक झुंड चोटी पर प्रकट होता है। देखते ही देखते अपने में समेटा हुआ सारा जल काले बादल छोड़ जाते हैं और उस स्थान से जुड़े हुए नदी नाले पानी से इतने भर जाते हैं कि उनमें बाढ़ जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। बाढ़ मार्ग में पडने़ वाले घर, घराट, सडक़ तथा पुल को लपेटते हुए अपने साथ बहा ले जाती है। प्रकृति की इस प्रक्रिया को कहते हैं, बादल फटना।

बादल क्यों फटते हैं?

जब-जब भी मॉनसून की बारिश अधिक होने लगती है तो पहाड़ों में बादल फटने की घटनाएं भी अधिक होने लगती हैं। पिछले कुछ वर्षों से तो बादल फटने की घटनाएं निरन्तर बढने़ लगी हैं। वर्ष 2023-24 और इस वर्ष 2025 में पहली बरसात में ही बादल फटने की घटनाओं ने कहर बरपाया है। जान माल का भारी नुकसान हुआ है। नदी -नालों के किनारे बने बहुत से गांव, मकान, होटल और गाडियां बह गईं। सैंकड़ों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। नदी के साथ-साथ बनी अधिकांश सडक़ें ध्वस्त हो गयी। तबाही के दृश्य जगह-जगह दिखाई दे रहे हैं। अधिक वर्षा के साथ-साथ इस तबाही का मुख्य कारण है - बादल का फटना यानि कि क्लाउड वर्स्ट।

बादलों का फटना

बादल फटने के क्या कारण हैं? यह हमेशा बरसात में ही क्यों फटते हैं? ये केवल पहाड़ों में ही क्यों फटते हैं? इस बारे में मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि जब बहुत अधिक नमी वाले बादल एक जगह रुक जाते हैं, पानी का भार अधिक होने से बादल का घनत्व अर्थात डेंसिटी बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है, तो उस समय बादल जल को रोक नहीं पाते अर्थात् पकड़ नहीं पाते। जिससे जल से भरे गुब्बारे की तरह बादल उस क्षेत्र में बरसना शुरू करते हैं। थोड़े से समय में ही बादल अपने साथ लाया सारा पानी छोड़ देते हैं जो मूसलाधार बारिश में परिवर्तित होता है। उस समय लगभग 100 मिलीमीटर प्रति घण्टे की दर से पानी बरसता है। बादल फटने की घटना प्राय: धरती से करीब 10 से 15 किलोमीटर की ऊंचाई से होती है और उस क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति पैदा होती है। कई बार बादलों के गर्म हवा के टकराने से भी ऐसी स्थिति उत्पन होती है। बादल केवल पहाड़ों पर ही क्यों फटते हैं? मैदानों में क्यों नहीं। इस बारे में वैज्ञानिकों का कहना है कि पहाड़ों में बादल इसलिये फटते हैं, कि जब पानी से भरे बादल हवा के साथ आगे बढ़ते हैं तो, पहाड़ों की चोटियों के बीच फंस जाते हैं, पहाड़ों की चोटियां इन्हें आगे नहीं बढने़ देतीं। चोटियों के बीच फंसते ही बादल पानी के रूप में परिवर्तित होकर बरसने लगते हैं और बादलों का घनत्व अधिक होने से बहुत तेज़ बारिश होती है। पहाड़ों पर पानी रुक नहीं पाता जो नीचे की ओर उतरता है। इससे अचानक नदी नालों का जलस्तर बढ़ जाता है। आसपास के छोटे-बड़े नालों का पानी इकठ्ठा होकर नीचे की ओर दौड़ता है जो, मिट्टी, कीचड़ पत्थरों के टुकड़ों और पेड़ों को उखाड़ते हुए मार्ग में आने वाले घरों, रास्तों और गाडियों को अपने साथ बहाकर ले जाता है। क्या बादल पहले भी फटते थे?

बादल पहले भी फटते रहे हैं। फॉरेस्ट सेटलमेंट की एक रिपोर्ट के अनुसार 1846 में व्यास घाटी की दक्षिण की चोटियों में बादल फटे थे। रोहतांग से लेकर डहनासर तथा सरी जोत में

बीझे न चूटी काली हयांनटीये,
शोही नेऊ डोभी दुआड़ा।
कोखे न आई काली बादलिए,
आई बोला डहने री धारा।

उस समय मनाली के मनालसु नाले, फौजल नाले, सरवरी नाले, खोखन तथा बजौरा नाले में भयंकर बाढ़ आई थी, जिससे नीचे के क्षेत्रों में भारी नुकसान हुआ था। इसी तरह 1947 में भी बादल फटने से जान माल का बहुत नुकसान हुआ था। कुल्लू की व्यास घाटी में 1997 में भी बादलों ने कहर बरपाया था।

देवगाथाओं में भी बादलों के फटने का जिक्र होता है। देव गाथाओं के अनुसार हिमाचल और उत्तराखंड के कई गांव पहाड़ दरकने के कारण दबते रहे हैं। हिमाचल और उत्तराखंड की भौगोलिक स्थिति एक जैसी है। यहां की हर घाटी में कोई न कोई नदी या नाला बहता रहा है। बादल फटने पर इन्हीं नदी नालों के किनारे सबसे अधिक नुकसान होता रहा है ।

पहले के मुकाबले गत वर्षों से बादल फटने से जान माल और सम्पत्ति का अधिक नुकसान हो रहा है। इसके मुख्य कारणों में प्रकृति का अवैज्ञानिक उत्खनन, मशीनों का उपयोग, बहुतायत में पेड़ों का कटान और नदी नालों के किनारे घरों का निर्माण करना है। चाहे वह कुल्लू का सैंज बाजार हो या बागीपुल, मंडी के सराज क्षेत्रों में नदी या खड्डों के किनारे बसे गांव हों, इनमें ही जान माल का सबसे अधिक नुकसान हुआ है।

कुछ वर्षों से सडक़ों का निर्माण नदी या खड्डों के किनारे अधिक हो रहा है। सडक़ की सुविधा देखते हुए कुछ लोगों ने उन्हीं सडक़ों के किनारे घर या दुकानें बनानी आरम्भ कर दी। देखते ही देखते ऊपर पहाड़ों में रहने वाले लोग भी वहीं आकर रहने लगे हैं। खड्डों के तटों पर बाजार बनने लगे हैं।

विकास की अंधी दौड़ में हम सब शामिल हो गए। प्रकृति तो प्रकृति है। वह अपने नियम से बंधी है। जब पानी बरसता है तो वह अपने पुराने मार्ग पर ही आगे बढ़ता है। और उसके मार्ग में जिसने भी अतिक्रमण किया होता है, उसे उसके प्रकोप का भाजन बनना पड़ता है। इस बार कुल्लू सैंज, मंडी सराज या धर्मपुर में सबसे अधिक नुकसान खड्ड के किनारे रहने वाले लोगों का ही हुआ है। हमारे पुरखे चाहे कितने भी निरक्षर क्यों न रहे हों, लेकिन वे समझदार थे। वे नदी या खड्ड के किनारे तथा दरकने वाले पहाड़ों के नीचे घर नहीं बनाते थे। यहां तक कि छोटे बरसाती नालों के पास भी गांव नहीं बसाते थे। वेशक उन्हें पीने के लिए पानी दूर से ढोकर लाना पड़ता था। पुराने समय में लोग प्रकृति के साथ तालमेल रखते थे। उन्हें प्राकृतिक हलचल की अधिक जानकारी रहती थी। इसीलिये हमारे पुरखे उसी स्थान पर घर बनाते थे, जहां न तो पानी से नुकसान होने का डर होता था और न ही पहाड़ के दरकने का।

ऐसे में क्या किया जाना चाहिये ?

बादल फटना प्रकृति की स्वभाविक प्रक्रिया है। अत: इसे पूरी तरह रोका नहीं जा सकता। अधिक वर्षा के कारण पहाड़ों का दरकना भी स्वाभाविक है। हमारी संस्कृति प्रकृति की पूजा करने पर बल देती रही है। हिमाचल की देवसंस्कृति में प्रकृति पूजन से संबंधित अनेकों अनुष्ठान हैं। देवताओं के पवित्र स्थानों को अपवित्र किया जा रहा है। पर्यावरण को संरक्षित करने का काम देवी देवता करते आ रहे हैं। वन विभाग के आंकड़ों के अनुसार चार सौ से अधिक वन देवताओं ने सुरक्षित रखे हैं। विकास की अंधी दौड़ में हम देव परंपराओं से विमुख होते जा रहे हैं। प्रकृति को मलिन करने लगे हैं। अत: देव संस्कृति का सम्मान करते हुए प्रकृति के प्रति श्रद्धाभाव रखना होगा। पर्यावरण विशेषज्ञों के सुझाव हैं कि ऐसी प्राकृतिक आपदाओं से बचने का उपाय यह है कि वृक्षों का अंधाधुंध कटान न करें। अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएं। हम हर वर्ष वन महोत्सव मनाते हैं, लेकिन वृक्षारोपण के बाद उनकी देखभाल नहीं करते, परिणाम यह होता है कि पेड़ सूख जाते हैं।

वृक्षों को नुकसान पहुंचाने में जंगलों में आग लगाना भी ठीक नहीं है। हर वर्ष कुछ शरारती तत्व जंगलों में आग लगाते हैं। जिससे हरे भरे पेड़ और जंगली जीव जंतु मर जाते हैं। इसलिए लोगों को इस बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है।

पर्यटन के नाम पर भी प्रकृति के साथ छेड़छाड़ हो रही है। वेशक, निर्माण करना आवश्यक है लेकिन व्यवस्थित रूप से हो। नदी नालों के समीप घर, मकान या सडक़ें नहीं बननी चाहिए। जो भी विकास हो, उसका दूरगामी प्रभाव देखते हुए और प्रकृति से ताल मेल बिठाते हुए हो। तभी हम प्रकृति के आक्रोश से बच सकते हैं। ◆◆◆ **लेखक अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति हिमाचल के प्रांत अध्यक्ष हैं।**

आपातकाल में कांग्रेस का तानाशाही चेहरा

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

चापलूस गिरोह ने बार-बार गीत गाकर इंदिरा गान्धी को विश्वास दिला दिया था कि देश संजय के कारनामों से भाव विभोर है। इंदिरा गान्धी ने लोकसभा के लिए चुनावों की घोषणा कर दी और सभी विपक्षी दलों ने विलय कर एक नई पार्टी, जनता पार्टी का गठन कर लिया। चुनाव के परिणाम चौंकाने वाले थे। इंदिरा गान्धी और संजय गान्धी दोनों हार गए।

पंडित जवाहर लाल नेहरु अंग्रेजों के जाने के बाद देश के पहले प्रधानमंत्री बने थे। यह पद उन्हें बहुत समझौतों के बाद मिला था। पहला समझौता तो लार्ड माऊंटबेटन की शर्तों को स्वीकार करना था। लार्ड माऊंटबेटन उन दिनों दिल्ली में ब्रिटेन के प्रतिनिधि थे। उनके एजेंडे में हिंदुस्तान को तोडना था और उसके लिए कांग्रेस को सहमत करना था। नेहरु के नेतृत्व में कांग्रेस ने जून 1947 में पाकिस्तान बनाने की मांग बाकायदा प्रस्ताव पारित करके स्वीकार कर ली। लेकिन उसके बाद भी नेहरु के प्रधानमंत्री बनने का रास्ता साफ नहीं हुआ था। कांग्रेस की विभिन्न प्रदेश समितियों को प्रधानमंत्री का निर्णय करना था। निर्णय गुजरात के सरदार पटेल के पक्ष में चला गया। तब नेहरु ने महात्मा गांधी को अपनी सहायता के लिए मैदान में उतारा। पंडित नेहरु, महात्मा गान्धी की न जाने क्यों कमजोरी बने हुए थे। महात्मा गान्धी ने इसके लिए जयप्रकाश नारायण की सहायता ली। उन्होंने जयप्रकाश नारायण को अपना सन्देशवाहक बना कर सरदार पटेल के पास यह सन्देश देकर भेजा कि वे स्वयं ही प्रधानमंत्री बनने की दौड़ से बाहर हो जाएं। पटेल गान्धी के प्रति निष्ठावान थे। वे पीछे हटे तो नेहरु प्रधानमंत्री बने। उसके बाद उन्होंने कुछ साल बाद ही अपनी बेटी इन्दिरा गान्धी को ही कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष बना कर सारी सत्ता घर में ही सीमित कर ली। यही सिलसिला आज भी चल रहा है।

इसने मनोवैज्ञानिक रूप से कांग्रेस के लोगों में नेहरु परिवार के प्रति मानसिक गुलामी का भाव पैदा किया और पार्टी आज तक उसी का शिकार है। यही कारण है कि नेहरु की मौत के बाद (यदि लाल बहादुर शास्त्री के लघु काल को निकाल दिया जाए), उनकी बेटी इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बन गईं। 1975 तक आते-आते इन्दिरा गान्धी को प्रधानमंत्री बने हुए लगभग दस साल हो गए थे, लेकिन इसी बीच इन्दिरा गान्धी के परिवार में उनके बेटे संजय गान्धी भी भारतीय राजनीति में धूमकेतु की तरह प्रकट होने लगे थे। भ्रष्टाचार को कांग्रेस ने शायद अपने नीति पत्र में दाखिल कर लिया था। देश में एक नई बेचैनी सर्वत्र देखी जा रही थी। लेकिन विश्वसनीय नेतृत्व नहीं मिल रहा था। इसे संयोग ही कहना चाहिए कि नेहरु को प्रधानमंत्री बनाने में मुख्य भूमिका निभाने वाले जय प्रकाश नारायण जीवित थे और पटना में गुमनाम जिंदगी जी रहे थे। इतिहास का एक चक्र पूरा हो गया था। इतिहास के इसी मोड़ पर शायद जय प्रकाश नारायण ने प्रायश्चित्त करने का निर्णय कर लिया था। नेहरु को प्रधानमंत्री बनाने में अपनी भूमिका का प्रायश्चित्त करने का निर्णय, सरदार पटेल को प्रधानमंत्री न बनने देने के षड्यन्त्र में अपनी भूमिका का प्रायश्चित्त करने का निर्णय। वे देश में इंदिरा की ओर से थोपी गई तानाशाही के खिलाफ चल रहे आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए अपने निवास से बाहर निकल आए। तब धर्मवीर भारती ने लिखा

स्वतंत्रता दिवस लोकतंत्र का उत्सव

स्वतंत्रता दिवस केवल आज़ादी का पर्व नहीं, बल्कि लोकतंत्र, संविधान और नागरिक अधिकारों की रक्षा का प्रतीक है। 1975 के आपातकाल में जब अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छीनी गई, तब जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं और जनता की शक्ति ने तानाशाही के विरुद्ध आवाज़ उठाई। जनता पार्टी की ऐतिहासिक जीत ने दिखा दिया कि भारत में सत्ता नहीं, जनमत सर्वोच्च है। यह दिवस हमें स्मरण कराता है कि लोकतंत्र की रक्षा में जागरूकता, संघर्ष और साहस की सदैव आवश्यकता रहेगी।

था, 'एक बूढ़ा सच बोलता हुआ सडक़ों पर निकल आया है।' इस बूढ़े के निकल आने से मानो पूरे देश में एक चिंगारी फैल गई। इस बूढ़े के पीछे सारा देश निकल पड़ा। अंग्रेजों के चले जाने के बाद यह तानाशाही के खिलाफ पहली लड़ाई थी। इसकी बहुत जरूरत थी। यदि अभी से तानाशाही की जड़ों को नष्ट नहीं किया जाता तो ये जड़ें सहस्राब्दियों पुराने भारतीय लोकतन्त्र के रस को सोख सकती थीं।

इन्हीं दिनों एक ऐसी घटना हुई जिसने इंदिरा गान्धी को अपने असली रूप में प्रकट होने के लिए विवश कर दिया। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा गान्धी की संसद सदस्यता को ही समाप्त कर दिया। कोर्ट का कहना था कि उन्होंने चुनाव जीतने के लिए भ्रष्ट साधनों का सहारा लिया था। अब इंदिरा गान्धी के पास प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं था, लेकिन उसने इस रास्ते पर चलने की बजाय तानाशाही का रास्ता चुना। अब इंदिरा गान्धी और उनका बेटा संजय गान्धी अपने असली रूप में प्रकट हुए। इंदिरा गान्धी ने देश में आपात स्थिति लागू कर दी। संविधान को स्थगित कर दिया। सभी विपक्षी नेताओं को बन्दी बना लिया गया। जय प्रकाश नारायण को तो किसी अज्ञात स्थान पर ले जाया गया। यह भी चर्चा थी कि उन्हें धीमा जहर दिया जा रहा था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्रतिबन्धित कर दिया गया। मीडिया के लिए सेन्सरशिप लागू कर दी। अघोषित रूप से संजय गान्धी को ही देश की सत्ता दे दी गई। वे अपनी सनक के हिसाब से मुख्यमंत्रियों को हटाने-बनाने में लगे रहे।

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री को अपमानजनक तरीके से हटाया गया। जेलों में किस प्रकार के अत्याचार हुए, यह कहने की जरूरत नहीं है। अलबत्ता उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दे ही दिया था कि आपात् स्थिति में संविधान में दिया गया राईट टू लाइफ, यानी जिंदा रहने का अधिकार भी स्थगित हो गया है, इसलिए सरकार के आगे जो थोड़ी बहुत रुकावट थी, वह सुप्रीम कोर्ट ने दूर कर दी थी। हरियाणा में बसों में सफर करना संकटमय हो गया था क्योंकि पुलिस कहीं भी बस को रोककर अस्पताल ले जाती थी और सवारियों की जबरदस्ती नसबंदी की जाती थी। उन दिनों मुख्यमंत्री बंसीलाल थे और वे संजय गान्धी के खासमखास लोगों में गिने जाते थे। लेकिन सारे विपक्ष को जेलों में ठूंस दिए जाने और सरकारी आतंक के नग्न प्रदर्शन के बाद भी देश के लोग चुप नहीं बैठे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आपात स्थिति को हटाने की मांग को लेकर देशव्यापी आन्दोलन छेड़ दिया। स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह करते हुए जेलें भर दीं। उनका मनोबल तोडऩे के लिए उन्हें बहुत यातनाएं दी गईं। हिमाचल प्रदेश के प्यारे लाल बेरी, चंडीगढ़ के श्रीचन्द गोयल और पंजाब के मित्रसेन को अमानवीय यातनाएं दी गईं।

जार्ज फर्नांडीज पर तो बाकायदा लाल किले में मुकद्मा चलाया गया और उनको पागल करने की हद तक मारा पीटा गया। लेकिन लोगों का मनोबल नहीं टूटा। जैसा कि दुनिया भर के तानाशाहों के साथ होता ही है, इंदिरा गान्धी के इर्द-गिर्द भी चापलूस कांग्रेसियों का एक गिरोह बन गया था। वह संजय गान्धी को कन्धों पर बिठा कर दरबार में निरन्तर नृत्य करता रहता था। इंदिरा गान्धी को लगता था कि परिवार की परम्परा के अनुसार संजय को ही आगे भारत का 'बादशाह' बनना है। इसलिए उसको भारतीय जनमानस में उतार दिया जाए तो अच्छा ही है। सेंसर होने के कारण तानाशाहों का जनमानस से संबंध टूटा रहता है, लेकिन उनको यह संबंध जोडऩे की जरूरत भी नहीं होती। लेकिन भारत में नेहरु-गान्धी तानाशाही के आगे एक समस्या तो थी ही। वह था डा. भीमराव रामजी अंबेडकर द्वारा बनाया हुआ संविधान। उस संविधान में लिखा हुआ था कि हर पांच साल बाद चुनाव करवाने पड़ेंगे। आपात स्थिति में इंदिरा गान्धी ने यह प्रावधान तो कर दिया था कि चुनाव पांच साल के बाद नहीं, बल्कि छह साल बाद करवाए जाएंगे, लेकिन चुनाव करवाए ही नहीं जाएंगे, ऐसा करना तो संभव नहीं था। और छह साल का वक्त समाप्त होने को था। चापलूस गिरोह ने बार-बार गीत गाकर इंदिरा गान्धी को विश्वास दिला दिया था कि देश संजय के कारनामों से भाव विभोर है। इंदिरा गान्धी ने लोकसभा के लिए चुनावों की घोषणा कर दी और सभी विपक्षी दलों ने विलय कर एक नई पार्टी, जनता पार्टी का गठन कर लिया। चुनाव के परिणाम चौंकाने वाले थे। इंदिरा गान्धी और संजय गान्धी दोनों हार गए। पंजाब से लेकर बंगाल तक कांग्रेस एक सीट भी जीत नहीं सकी। भारत ने कांग्रेस की तानाशाही को अपना उत्तर दे दिया था। इस तरह विशेषकर आपातकाल की बात करें, तो उस दौरान कांग्रेस का तानाशाही रूप देखने को मिला। ◆◆◆ **लेखक वरिष्ठ स्तम्भकार हैं।**

किसान की ऐतिहासिक सफलता

छह साल की मेहनत के बाद तैयार किया हींग का बीज

अगर मन में कुछ कर गुजरने का जज़्बा हो, तो इंसान कठिन से कठिन राहों को भी पार कर लेता है। ऐसा ही उदाहरण पेश किया है हिमाचल प्रदेश के जनजातीय जिला लाहुल-स्पीति के **सलग्रा गांव** के किसान **तोग चंद ठाकुर** ने। उन्होंने छह वर्षों की कड़ी मेहनत और तप के बाद भारत में पहली बार **हींग के पौधे से बीज तैयार** करने में सफलता प्राप्त की है। यह न केवल उनके जीवन की बड़ी उपलब्धि है, बल्कि देश की कृषि प्रणाली के लिए भी एक नया आयाम है।

भारत में हींग की खपत तो बहुत अधिक है, लेकिन अब तक यह पूरी तरह से आयात पर निर्भर था। लेकिन अब लाहुल की धरती पर हींग की खेती और बीज उत्पादन की सफलता ने भारत को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में एक नया रास्ता दिखाया है।

करीब चार साल पहले **सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर** के वैज्ञानिकों ने लाहुल घाटी का दौरा किया और पाया कि यहां की ठंडी और शुष्क जलवायु हींग की खेती के लिए अत्यंत अनुकूल है। इसके बाद उन्होंने कुछ किसानों को हींग के पौधे और बीज वितरित किए। तोग चंद ठाकुर ने न केवल इन्हें उगाया, बल्कि निरंतर शोध और देखभाल के माध्यम से बीज उत्पादन की दिशा में लगातार प्रयास करते रहे।

तोग चंद ने बताया कि वह पिछले **छह वर्षों से हींग का बीज तैयार करने की कोशिश** कर रहे थे, लेकिन वास्तविक सफलता उन्हें चार साल पहले मिली जब पौधों ने बीज देना शुरू किया। उन्होंने अपने अनुभव और ज्ञान से यह सिद्ध कर दिया कि लाहुल की जलवायु हींग उत्पादन के लिए सबसे उपयुक्त है।

उनकी इस मेहनत और सफलता को वैज्ञानिकों ने भी खूब सराहा। सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर ने उन्हें प्रशस्ति पत्र प्रदान किया और अब उनकी इस उपलब्धि को **प्रधानमंत्री कार्यालय** तक भी भेजा गया है ताकि इसे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिले।

यह सफलता केवल तोग चंद की नहीं, बल्कि पूरे लाहुल की है। इससे प्रेरित होकर अन्य किसान भी हींग की खेती अपनाकर आर्थिक रूप से सशक्त बन सकते हैं। यह परियोजना न केवल कृषि नवाचार का प्रतीक है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक मजबूत कदम भी है।◆◆◆

मिशन मौसम से गांव स्तर पर भी जल्द मिल जाएगा सटीक पूर्वानुमान : जितेंद्र

केंद्र सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि जल्द ही गांव स्तर पर भी मौसम का सटीक पूर्वानुमान मिलेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से बीते दिनों लांच किए गए मिशन मौसम के तहत यह प्रयास किए जा रहे हैं। देश में ऑटोमेटिक वेदर स्टेशनों की संख्या बढ़ाई जा रही है। मौसम पूर्वानुमान की एक्यूरेसी (सटीकता) और बेहतर करने के लिए भी प्रयास जारी हैं। राजधानी शिमला में प्रेस वार्ता करते हुए केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि बादल फटने की घटनाओं का भी पूर्वानुमान जारी करने को लेकर अभी शोध जारी है। केंद्र सरकार अब मौसम पूर्वानुमान को गांव-गांव तक सटीक और समय पर पहुंचाने के लिए मिशन मौसम को और अधिक सशक्त बना रही है। उन्होंने कहा कि मौसम विभाग की भविष्यवाणियां अब और अधिक सटीक होती जा रही हैं। मिशन मौसम के अंतर्गत तकनीक के बेहतर इस्तेमाल से इनकी एक्यूरेसी का स्तर और ऊंचा होगा। हमारा लक्ष्य है कि किसानों और ग्रामीण आबादी तक सटीक मौसम जानकारी समय रहते पहुंचे, जिससे वे कृषि, सिंचाई और अन्य गतिविधियों की बेहतर योजना बना सकें।

प्रकृति माता

मनुष्य न जाने क्यों अपने को, सब कुछ समझ बैठा है
नाक, कान, मुंह और आँखें, सब कुछ बंद करके बैठा है
मनुष्य न जाने क्यों अपने को.....
मां की भूमिका क्या होती है, यह सीख देती यह प्रकृति माता
अजर, अमर और अमिट है, बस हमारा इससे नाता
इसी गीत को गाने कवि, बस नदी किनारे बैठा है
मनुष्य न जाने क्यों अपने को.....
भला ही सोचा होगा माता ने जब जन्म गोद में लिया हमने
जितनी तैयारियां की होगी मां ने, उतनी ही की है प्रकृति माता ने
कपड़े खिलौने जब मां लाई होगी, बनाने के साधन पहले तैयार
रखें होंगे (प्रकृति मां ने)
धीरे धीरे आज वह नर पशु, मनुष्य बनकर बैठा है
मनुष्य न जाने क्यों अपने को.....
कभी न सोचा होगा प्रकृति माता ने मनुष्य इतना गिर जाएगा
एक जहरीले बिच्छू की भांति, वह माता को ही निगल जाएगा
अंधानुकरण में इतना वह, आधुनिकीकरण कर जाएगा
पहाड़ियां काटकर चौड़े रोड़, नदियों का भी रुख मोड़
जरूरत से बड़े मकान बना अपने को विकसित समझ बैठा है
मनुष्य न जाने क्यों अपने को.....
स्वार्थ का चोला पहनकर, मनुष्य आगे चल पड़ा था
माता का शोषण कर वह, आगे ही तो बढ़ चला था
आखिर मां तो मां होती है, चेतना उसका काम था
रुप धार कर आई वह, व्यास जिसका नाम था
पुल हो या बड़े मकान, सबको अपने साथ बहाया था
पर पंचवक्त्र का वह मंदिर देखो, इतिहास संजोए बैठा है
मनुष्य न जाने क्यों अपने को.....
बड़े-2 मकान बहे, बड़े-2 सब रोड़
बड़े-2 पुल बहे, बड़े-2 कुछ लोग
प्रकृति का यह तांडव देखा, डरे सहमें सब लोग
देवों ने अपनी व्यथा सुनाई, पर सुनने को कौन तैयार है भाई
क्योंकि ?
मनुष्य तो अपने को, देवों से बड़ा मान के बैठा है
मनुष्य ना जाने क्यों अपने को.....

टिक्कम, जिला ऊना, हिमाचल प्रदेश

छोड़ दे मोह माया कर ले किनारा

कभी शांत बैठ कर मिटा लीजिये
अपने जीवन भर की थकान
न आ जाये कहीं मालिक का बुलावा
खाली करवा ले अपना मकान
अपना ही समझते रहे उम्र भर
दूसरे का किराए का मकान
किराए पर आगे दे दिया उसको भी
बसे उसमें ईर्ष्या,अहंकार और कड़वी जुबान
भागम भाग रही जिंदगी भर
मिला न एक पल भी चैन
अंत समय जब आया पास
क्यों सजल हो रहे तेरे नैन
गोरी चिट्टी चमड़ी जल जाएगी
हड्डियों की तेरी बन जाएगी राख
मर मर के कमाई जो तूने दौलत
जाएगी न साथ खाली होंगे हाथ
दूसरों के लिए जिया बहुत
कुछ पल अपने लिए भी जी ले
छोड़ दे मोह माया कर ले किनारा
मुक्ति मिलेगी राम नाम रस पी ले।

रवींद्र कुमार शर्मा, घुमारवीं, जिला बिलासपुर हि प्र

◆◆◆

खंडहरपन

फिर तबाही का मंजर हर तरफ छाने लगा
गम का दरिया फिर चारों ओर बहने लगा है।
करते थे जो आधुनिकता का दावा अपने वहम में
पुरातत्व में उनका अस्तित्व फिर खोने लगा है।
मानते थे जो अपनी सत्ता आसमान से भी ऊंची
पर्वतों के नीचे उनका अहम दमन होने लगा है।
करते थे जो परिहास औरो की कमियों पर
आज उनके दर्प पर कुदरत का अट्टहास होने लगा है।

डॉ.राजीव डोगरा, कांगड़ा हिमाचल प्रदेश

ज्यादा नमक सेहत का दुश्मन

मुकेश किग

वैसे तो किसी भी चीज की अधिकता नुकसान ही देती है लेकिन जब बात सेहत की हो तो खानपान में पूरी चौकसी रखना बहुत जरूरी है। हमारे देश में रक्तचाप बढ़ने से कई रोग व्यक्ति को मौत की तरफ ले जा रहे हैं तो यह बड़ी चिंता का विषय है। साथ ही गुर्दे व दिल पर भी विपरीत प्रभाव, पड़ने का मुख्य कारण ज्यादा नमक का सेवन व धूम्रपान ही हैं। आई सी एम आर ने भी चेताया है कि नमक का ज्यादा मात्रा में सेवन खतरनाक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भी प्रतिदिन पांच ग्राम से कम नमक ही हमारे लिए लाभप्रद है जबकि भारतीय शहरों में 9.2 ग्राम नमक का सेवन प्रतिदिन किया जा रहा है, जिसपर गहराई से सोचना जरूरी है। हमें कम सोडियम वाला नमक ही प्रयोग में लाना सही होगा क्योंकि, इससे शरीर पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता, दिल के स्वास्थ्य में शक्ति व सुधार तथा रक्तचाप उससे कम होता है। इसी तरह धूम्रपान के भी कई नुकसान हैं। रक्तचाप, टी. बी. व फेफड़ों का कैंसर, मुंह व गले के रोग धूम्रपान से होते हैं। कम सोडियम वाला नमक उच्च रक्तचाप वालों को बड़ा लाभ पहुंचा सकता है। ज्यादा नमक के सेवन से बचना चाहिए क्योंकि इससे उच्च रक्तचाप में 30 से 50 प्रतिशत तक वृद्धि हो सकती है जो जानलेवा हो सकती है नमक के साथ ही मीठा भी सीमित मात्रा में खाना चाहिए क्योंकि यह भी कई रोगों का मुख्य कारण है, लेकिन दिन में कई नमकयुक्त खाद्य पदार्थ कारण बनता है। हम खाने में तो नमक खाते ही रहते हैं। इसी से नमक की मात्रा बढ़ जाती है। समोसा, पकौडे, चिप्स, बर्गर, मोमोज, चौमिन जैसे कई पदार्थ वेज, नमक, मिर्च, मसाले से बने होते हैं। यहीं अतिरिक्त नमक नुकसान देता है।

“अधिक नमक का सेवन सेहत के लिए जहर समान है, जिससे हृदय, रक्त चाप और गुर्दों पर बुरा असर पड़ता है। कम सोडियम वाला नमक अपनाकर और संतुलित खानपान से हम लंबे, स्वस्थ जीवन की दिशा में बढ़ सकते हैं।”

मीठी चीजें भी शुगर की समस्या बढ़ाती है। गुण-अवगुण देखे बिना हम खतरा मोल लेते हैं।। शब्द गुड, गन्ना नुक्सान नहीं देते बल्कि फायदा पहुंचाते हैं। तेज नमक- मिर्च हमारे स्वभाव पर भी विपरीत प्रभाव डालते हैं। चिड़चिड़ा बना देते हैं। काला नमक, काली मिर्च दवा की तरह काम करते है। नीम, गाजर, आंवला का सेवन सेहत के लिए अच्छा है। आंखों, एलर्जी व रक्त के लिए गुणकारी है।

ज्यादा नमक जहर समान है। इसलिए आज कई तरह के हृदय रोग जकड़ रहे हैं। शाकाहारी भोजन शरीर को नई शक्ति देता है जबकि मांसाहार रोगों को जन्म देता है। कॉलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है व दिल के लिए खतरा बनता है। सरसों तेल का प्रयोग लाभप्रद है। नमक की मात्रा कम करके हम रोगों से बच सकते है व लम्बा जीवन पा सकते हैं। जिसने कभी नमक का सेवन न किया हो उसपर कोई भी जहर असर नहीं डाल सकता यानि नमक भी जहर जैसा ही है।◆◆◆

वेदांत दर्शन और गीता का प्रचार करने वाले ब्राजील निवासी जोनस को मिला पद्मश्री सम्मान

माथे पर तिलक, गले में माला और सूती सफेद वस्त्र धारण करने वाले ब्राजील के जोनस मजेट्टी निस्वार्थ भाव से वेदांत दर्शन और भगवद्गीता की अलख जगाने का काम कर रहे हैं।

जोनस मजेट्टी को अब 'आचार्य विश्वनाथ' के नाम से भी जाना जाता है जिन्हें भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में उनके योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

पश्चिमी जीवन शैली से थे असंतुष्ट ब्राजील में जोनस मजेट्टी ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में अपनी पढ़ाई की और स्टॉक मार्केट में काम किया। जीवनशैली से संतुष्ट न होने के कारण उनका आध्यात्मिकता की ओर झुकाव हुआ। भारत आकर उन्होंने आचार्य दयानंद सरस्वती के आश्रम में वेदांत की शिक्षा प्राप्त की।

1.5 लाख लोगों तक वैदिक ज्ञान पहुंचाया

शिक्षा प्राप्त करने के बाद जोनस ने ब्राजील के शहर पेट्रोपोलिस में 'विश्व विद्या' नामक संस्था की स्थापना की। संस्था के माध्यम से ये ब्राजील और अन्य देशों में वेदांत, योग, संस्कृत, गीता और रामायण का प्रचार-प्रसार करते हैं। आधुनिक तकनीक का सहारा लेते हुए वे ऑनलाइन फ्री कोर्स करवाते हैं। उनकी शिक्षाओं से पिछले 7 वर्षों में 1.5 लाख से अधिक छात्रों तक वैदिक ज्ञान पहुंचा है।

सनातन विश्व कल्याण का मार्ग

एलन को भारत यात्रा करनी चाहिए। मुझे आश्चर्य है कि वह भारत नहीं आये। अगर नहीं आते हैं तो यह बड़ी गलती होगी। भारत उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। दौलत सफलता का पैमाना नहीं। वित्तीय कामयाबी के बाद देखना होता है कि पॉलिटिकल और सोशल हैसियत क्या है? सिर्फ अमीर होना काफी नहीं। आपको तीनों हैसियतों में सही तालमेल बिठाना होगा। दौलत आपको संपूर्ण व्यक्ति नहीं बनाती। सनातन विश्व कल्याण का मार्ग है। मुझे यह बेहद आकर्षित करता है। सनातन इतना प्राचीन है कि इसे समझकर दिमाग चकरा जाता है। यह एहसास दिलाता है कि हम कितना जानते हैं।

इरॉन मस्क, एलन मस्क के पिता

रूप व गुण श्रेष्ठ कौन?

मगध सम्राट चंद्रगुप्त ने एक बार आचार्य चाणक्य से कहा, 'गुरुवर, काश आप सुन्दर होते? चाणक्य ने कहा, राजन मनुष्य की पहचान उसके गुणों से होती है, रंगरूप से नहीं।' तब चंद्रगुप्त ने पूछा, 'आचार्य, क्या आप कोई ऐसा उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हो जहाँ 'गुण' के सामने 'रूप' छोटा रह गया हो। तब चाणक्य ने राजा को दो गिलास पानी पीने को दिया।

फिर चाणक्य ने कहा, 'पहले गिलास का पानी स्वर्ण के घड़े का था और दूसरे गिलास का पानी मिट्टी के घड़े का। आपको कौन-सा पानी अच्छा लगा।' चंद्रगुप्त बोले, मिट्टी के घड़े का। पास ही सम्राट चंद्रगुप्त की पत्नी बैठी थीं। वह इस उदाहरण से काफी प्रभावित हुईं। महारानी ने कहा, 'वो सोने का घड़ा किस काम का जो सन्तुष्टि न दे सके। मटकी भले ही कुरुप हो, लेकिन प्यास मटकी के पानी से ही बुझती है।' यानी रूप नहीं गुण महत्त्वपूर्ण होता है।

इसी प्रकार मनुष्य का रूप नहीं बल्कि उसके गुणों का सम्मान होना चाहिये। रूप तो क्षणिक है, अस्थायी है, इसलिए गौण है। लेकिन गुण जीवन पर्यन्त साथ रहते हैं और मृत्यु के बाद भी जीवंत रहते हैं, चर्चा में रहते हैं। गुणों का सदा स्मरण किया जाता है।◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. शल्य 'चिकित्सा का जनक' किस भारतीय को माना जाता है?
2. विश्व की सबसे प्राचीन चिकित्सा प्रणाली कौन सी है?
3. किस प्राचीन भारतीय गणितज्ञ द्वारा ज्या (sine) के मान की तालिका विकसित की गई थी?
4. आर्यभट्ट की अंतरिक्ष विज्ञान पद्धति को किस नाम से जाना जाता था?
5. प्राचीन भारत में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रमुख सिद्धान्तों का विकास किस राजवंश के शासन काल में हुआ था?
6. किस प्राचीन भारतीय गणितज्ञ ने द्विघात समीकरण (Quadratic Equation) का सामान्य हल सर्वप्रथम वर्णित किया था?
7. 'शुल्व सूत्र' के प्रारंभिक रचयिता कौन थे?

उत्तर : 1. सुश्रुत 2. आयुर्वेद 3. आर्यभट्ट 4. औद आयका पद्धति 5. गुप्त राजवंश 6. ब्रह्मगुप्त 7. बौधायन

...बूझो तो जानें

1. बिना पंखों के उड़ता जाता,
   संदेशों को सब तक पहुँचाता।
   ना दिखे, ना छुए, पर हर घर में बजता जाता।
2. खुद जलता, सबको रोशन करता,
   विद्या का है यह सच्चा दाता।
   बिजली से भी हूँ जुड़ा,
   अज्ञान का अंधकार मैं चुराता।

3. बिन जड़ों के खड़ा हूँ मैं,
   हर सवाल का जवाब हूँ मैं।
   पढ़ो मुझे तो ज्ञान मिलेगा,
   कभी न खत्म होने वाला सिलसिला हूँ मैं।

4. सूरज का मैं भाई कहलाऊँ, पर रात को ही मैं दिखाई आऊँ।
   मैं घटता-बढ़ता जाता हूँ, कभी गोल, कभी आधा दिखता हूँ।
5. पंख नहीं पर उड़ता जाता, सूचना का खजाना लाता।
   हर सवाल का उत्तर देता, बटन दबाओ, सब कुछ बताता।

उत्तरः 1. इंटरनेट/मोबाइल नेटवर्क, 2. दीपक/बल्ब 3. पुस्तकालय (लाइब्रेरी), 4. चंद्रमा, 5. कंप्यूटर

संघ की सेवा, संकट में संबल

कार्यालय
मातृवन्दना (मासिक)
डा. हेडगेवार भवन, द्वितीय तल नाभा,
शिमला-171004, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990

सेवा में

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on :